आत्म

जैन मुनि १००८ श्री भागमल जी महाराज
धर्मार्थ हस्पताल
की
दसवीं वर्ष गाँठ
पर
प्रकाशित

14 मई, 1989

प्रकाशक

जैन मुनि श्री भागमल जी महाराज धर्मार्थ हस्पताल समिति (पंजीकृत)

C-56 भागमल मार्ग
शास्त्री पार्क
दिल्ली- 110053

हमारी वर्तमान आवश्यकताएँ

(1) हस्पताल भवन के निर्माणाधीन प्रथमतल एवं द्वितीयतल को पूरा करना

(2) दंत चिकित्सा के लिए आधुनिक उपकरणों से युक्त कक्ष की व्यवस्था करना

(3) खून एवं मल मूत्र परीक्षा विभाग (लैबोरेट्री) के लिये आधुनिक उपकरणों की व्यवस्था करना

(4) रोगी वाहन (**Ambulance**) की व्यवस्था

(5) रोगियों के प्रयोग के लिये वाटर-कूलर का प्रबन्ध

हमारी भविष्य की योजनाएँ

(1) पूर्ण सुविधायुक्त मैटरनिटी वार्ड की स्थापना जिसमें आपरेशन की भी व्यवस्था हो

(2) ई.सी.जी. उपकरण की व्यवस्था

(3) रंगीन एक्स-रे एवं कैट-स्कैन की व्यवस्था

(4) आई.सी.सी.यू. (**ICCU**) कक्ष की स्थापना

अपने संरक्षकों/दानी महानुभावों से उपरोक्त कार्यों के लिये आर्थिक सहायता एवं सुभाव देने का अनुरोध है।

भवदीय

जैन मुनि .1008 स्व. श्री भागमल जी महाराज
धमार्थ औषधालय समिति (पंजीकृत)

संपादकीय

जैन मुनि १००८ स्व० श्री भागमल जी महाराज धर्मार्थ हस्पताल (रजि०) शास्त्री पार्क की दसवीं वर्ष गाँठ के पावन अवसर पर हस्पताल समिति ने सेवा-भारती नाम से स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय किया।

इस स्मारिका में आप को बाल ब्रह्मचारी स्थविर पद विभूषित स्व० श्री भागमल जी महाराज के जीवन एवं हस्पताल की प्रगति के विभिन्न चरणों का परिचय, आय-व्यय लेखा जोखा एवं हस्पताल की भावी योजनाओं का परिचय पढ़ने को मिलेगा।

हमारा विचार स्मारिका को विस्तृत रूप देने का था परन्तु समयाभाव के कारण ऐसा संभव नहीं हो पाया। फिर भी जो कुछ लेख, निबन्ध आदि हमें प्राप्त हो पाए हैं उन्हें हम प्रकाशित कर रहे हैं।

स्मारिका प्रकाशन का हमारा यह प्रथम प्रयास है। इसमें कुछ त्रुटियों का रहना स्वाभाविक है। अतः पाठक वृन्द हंस विवेकानुसार सार-सार ग्रहण कर त्रुटियों को त्यागने का प्रयास करें।

जिन भी सन्तों ने अपने लेख, आशीर्वचन हमें प्रेषित किए उनका तथा विज्ञापनदाताओं का मैं हस्पताल समिति की ओर से हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ।

सम्पादक

पवन कुमार जैन

प्रबन्धकीय वक्तव्य

धर्मपाल जैन
(प्रबंधक श्री भागमल जी महाराज धर्मार्थ हस्पताल)

जैन मुनि श्री भागमल जी महाराज धर्मार्थ औषधालय की स्थापना सन् 1979 में हुई। गत दस वर्षो से यह हस्पताल निम्न मध्यम वर्गीय जनता की निष्ठा व लगन से सुचारु रूप से सेवा कर रहा है। उपप्रवर्तक परम सेवाभावी गुरूदेव श्री प्रेम सुख जी म० की प्रेरणा एवं कृपा से यह हस्पताल निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। आज हस्पताल का निजी भवन है। विभिन्न कुशल चिकित्सकों की सुविधाएँ इस हस्पताल में उपलब्ध हैं।

मैं गत दस वर्षों से जैन मुनि श्री भागमल जी महाराज धर्मार्थ औषधालय समिति के प्रबन्धक पद पर हूँ। मैंने अभी तक यह अनुभव किया है कि हम हस्पताल के कार्य के लिए जिसके पास भी पहुँचे वहाँ से हमें भरपूर सहयोग मिला। विशेष कर कुछ अजैन भाइयों ने हमारे हस्पताल को विभिन्न रूपों में सहयोग दिया। हमने जब भी उनसे सहयोग मांगा हमें सहर्ष सहयोग देकर हमारा साहस बढ़ाया। वे साधुवाद के पात्र हैं।

हमारा यह प्रयास है कि हस्पताल में आधुनिक सुविधाओं को और बढ़ाया जाए। निकट भविष्य में शीघ्र ढाई मंजिल बिलिडिंग में हस्पताल का कार्य चलना प्रारम्भ हो ऐसा हमारा प्रयास होगा।

मैं कुछ ऐसे व्यक्तियों का उल्लेख करना अपना कर्त्तव्य मानता हूँ जिन्होंने हस्पताल को निरन्तर एवं उल्लेखनीय सहयोग दिया है। प्रमुख समाज सेवी स्व. श्री चमन लाल जी जैन (तिमारपुर, दिल्ली) जिन्होंने हमें धन से तो सहयोग दिया ही साथ ही अपने तन तथा बहुमूल्य समय का भी योगदान दिया। समय-समय पर वे स्वयं हस्पताल का निरीक्षण किया करते थे तथा जो भी कमी देखते उसे हर संभव तरीके से पूरा करने का प्रयास करते थे। अति दुःख है कि उनका कुछ समय पूर्व निधन हो गया। परन्तु इनके पु त्र अपने पिता के ही अनुरूप हमारे हस्पताल को सहयोग दे रहे हैं। दानवीर सेठ श्री राम नारायण जी जैन एवं उनके पुत्रों का सहयोग भी प्रशंसनीय है। हमने जब भी जो भी सहयोग मांगा हमें मिला। इनके ही सुपुत्र श्री सत्यभूषण जैन ने हस्पताल के प्रथम तल का शिलान्यास कर, गौरव बढ़ाया। श्री गुलशन राय जी जैन (लिफाफे वाले) गत दस वर्षों से विभिन्न प्रकार के छोटे-बड़े लिफाफे निःशुल्क हस्पताल को देकर हमारी सहायता कर रहे हैं? श्री श्रीचन्द जैन - नक्शे वाले पिछले कई वर्षों से हस्पताल को निःशुल्क पट्टियाँ दे रहे हैं। श्रमणोपासक श्री जे० डी० जैन (गाजियाबाद) तथा इनके सभी भाइयों का सहयोग भी प्रशंसनीय है। इनके भाई श्री रामदयाल जी जैन ने हस्पताल भवन की आधार शिला अपने कर कमलों द्वारा रखी। गुरुभक्त श्री वीर सैन जैन (इण्डिया फाईल) ने हस्पताल निर्माण में उल्लेखनीय सहयोग देकर हमारे कार्यों को सुगम बनाया। सुश्रावक श्री रामेश्वर दयाल जी जैन (विवेक विहार) ने भी हमें भरपूर सहयोग दिया है। इन सबके प्रति मैं हस्पताल समिति की ओर से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

जिन दान दाताओं ने हस्पताल को आज तक अपना प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग दिया, या दे रहे हैं उनका मैं हस्पताल समिति की ओर से सादर धन्यवाद करता हूँ और भविष्य में आपके सहयोग की आशा करता हूँ।

मैं हस्पताल समिति, जैन स्थानक सभा, शास्त्री पार्क के अधिकारियों व कार्यकर्त्ताओं का भी कृतज्ञ हूँ जब भी हमने कोई कार्यक्रम किया समाज के सभी आबाल वृद्धों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर टीम भावना से कार्य करके असंभव कार्य को भी संभव कर दिखाया। जब भी कोई कार्य करना होता है तो हमारे कार्यकर्त्ता दिन-रात कठोर परिश्रम कर कार्य को सुगम बना देते हैं।

धन्यवाद
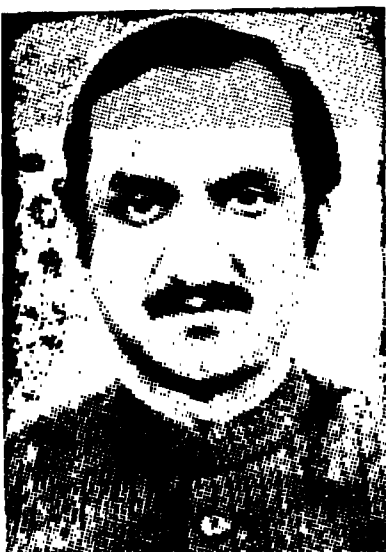
MEMBER OF PARLIAMENT
(LOK SABHA)

श्रीमान मंत्री महोदय
जैन मुनि १००८ स्व० श्री भागमल जी महाराज
धर्मार्थ औषधालय समिति
दिल्ली

आपके धर्मार्थ अस्पताल की स्थापना की दशाब्दी के शुभ अवसर पर आपको बधाई देता हूं। आपने जिस प्रकार यह दस वर्ष सफलतापूर्वक सेवा कार्य में निकाले हैं मैं चाहता हूं भविष्य में भी आप आम जनता के कल्याणार्थ सेवा कार्य करते रहेंगे। आपकी सेवा सराहनीय व प्रशंसनीय है।

(जय प्रकाश अग्रवाल)

संदेश

सेवा में

प्रधान/मंत्री महोदय
श्री भागमल जैन औषधालय
शास्त्री पार्क, देहली- 54

यह जानकर अति हर्ष हुआ कि श्री भागमल जैन औषधालय की दसवीं वर्षगांठ पर आपकी सक्रिय कार्यकारिणाी एक स्मारिका का प्रकाशन कर रही है।

बाल ब्रह्मचारी युग पुरुष महामुनि स्व. श्री श्री १००८ श्री भागमल जी महाराज एक अनूठी प्रतिभा विलक्षण प्रतिभा के धनी जैन मुनि थे। उन्हीं महान आत्मा की सादगी, सरलता, भव्यता एवं समाज कल्याण की भावना को अग्रसर करते हुये उपप्रवर्तक सेवाभावी सरल चित श्री प्रेमसुख जी महाराज समय-२ पर अनेक समाज हित के कार्यों में संलग्न हैं। उन्हीं की प्रेरणा एवं सतत प्रयासों व आशीर्वाद का परिणाम आपका औषधालय है जो निरन्तर दस वर्षो से उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। इस क्षेत्र की सम्पूर्ण जनता बिना भेदभाव के औषधालय से लाभ उठा रही है। जहां अनेक अनुभवी चिकित्सकों द्वारा उपचार किया जा रहा है।

मुझे आशा व विश्वास है कि सुयोग्य एवं कर्मठ प्रबंधकारियों द्वारा संचालन, भविष्य में औषधालय की चहुँमुखी उन्नति ही औषधालय का प्रमुख लक्ष्य होगा। मेरा सहयोग एवं सेवा सदैव आपके साथ है।

भवदीय
जे.डी. मित्तल
बलदेव पार्क

श्री महावीराय नमः

प्रातः स्मरणीय बालब्रह्मचारी श्रद्धेय

श्री श्री १००८ श्री भागमल जी महाराज
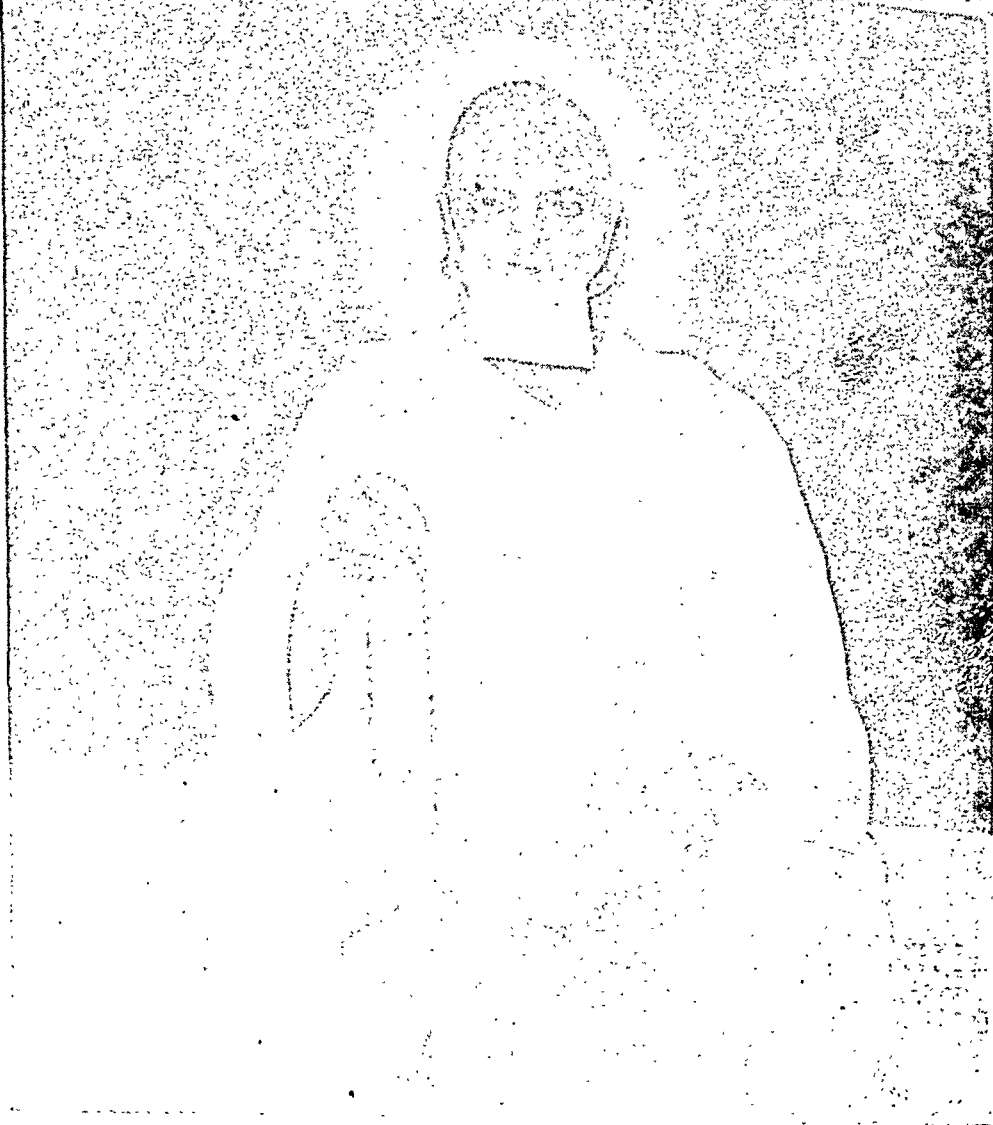
जन्म स्थान : ग्राम पुरखास (हरियाणा)
जन्म तिथी : फाल्गुन शुक्ला पंचमी वि० सं० १९३८
दीक्षा तिथी : फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशी वि० सं० १९६२, ग्राम काहनी (हरियाणा)
स्वर्गवास तिथी : बुधवार ४ मार्च १९७१ सदर बाजार, दिल्ली

श्रमण संघीय आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनन्द ऋषि जी महाराज
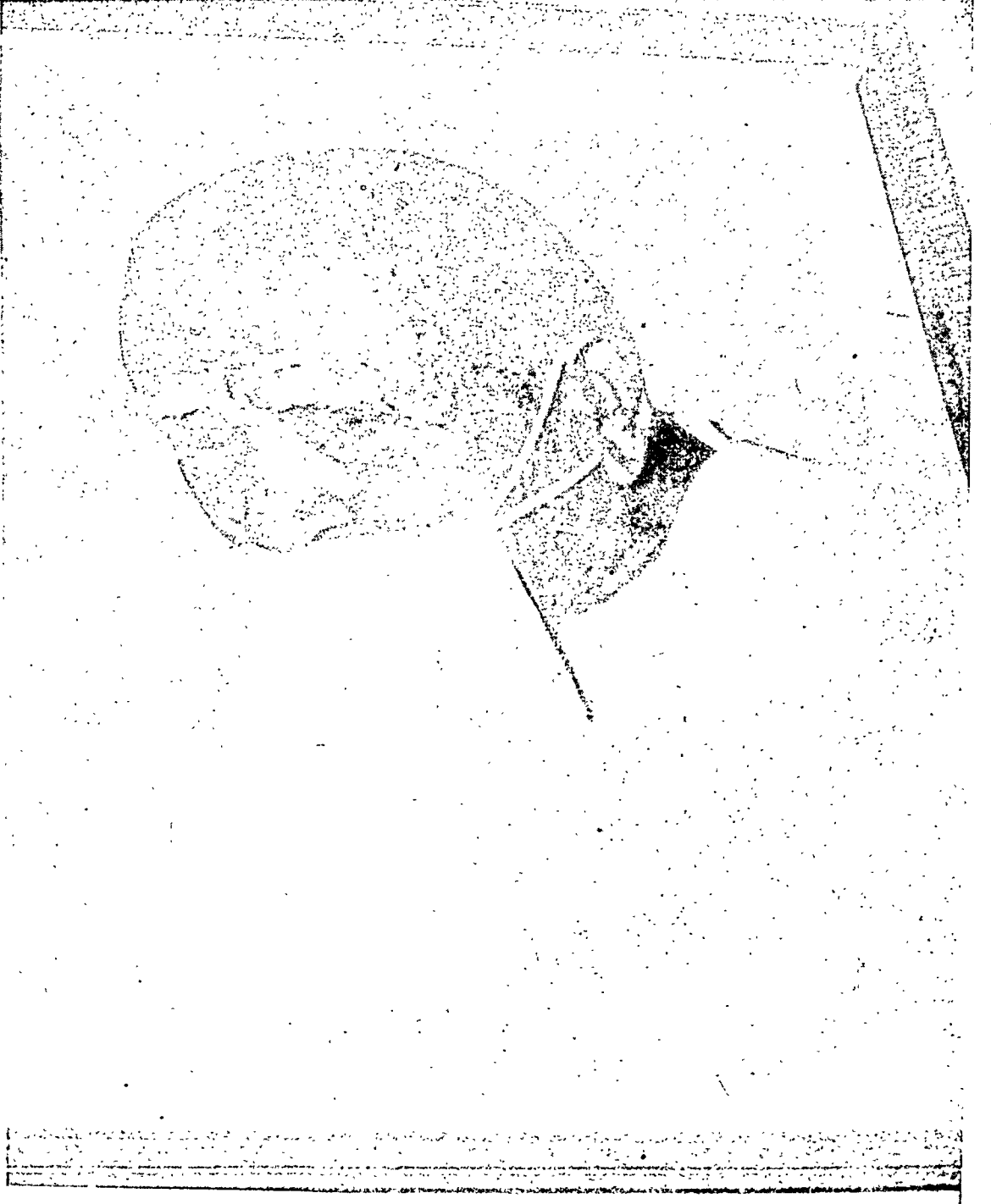
जन्म स्थान : ग्राम चिचोड़ी, अहमद नगर (महाराष्ट्र)
जन्म तिथी : श्रावण शुक्ला १, विक्रम सम्वत १९५७
दीक्षा : मीरी गांव (महाराष्ट्र), विक्रम सम्वत १९७०

परम सेवाभावी उप-प्रर्वतक

श्री प्रेम सुख जी महाराज

जन्म स्थान : लक्ष्मनपुर, वाराणसी

जन्म तिथि : वसंत पंचमी वि० सं० १९९०

दीक्षा तिथी : वि० सं० २०१९ बुराडी ग्राम दिल्ली
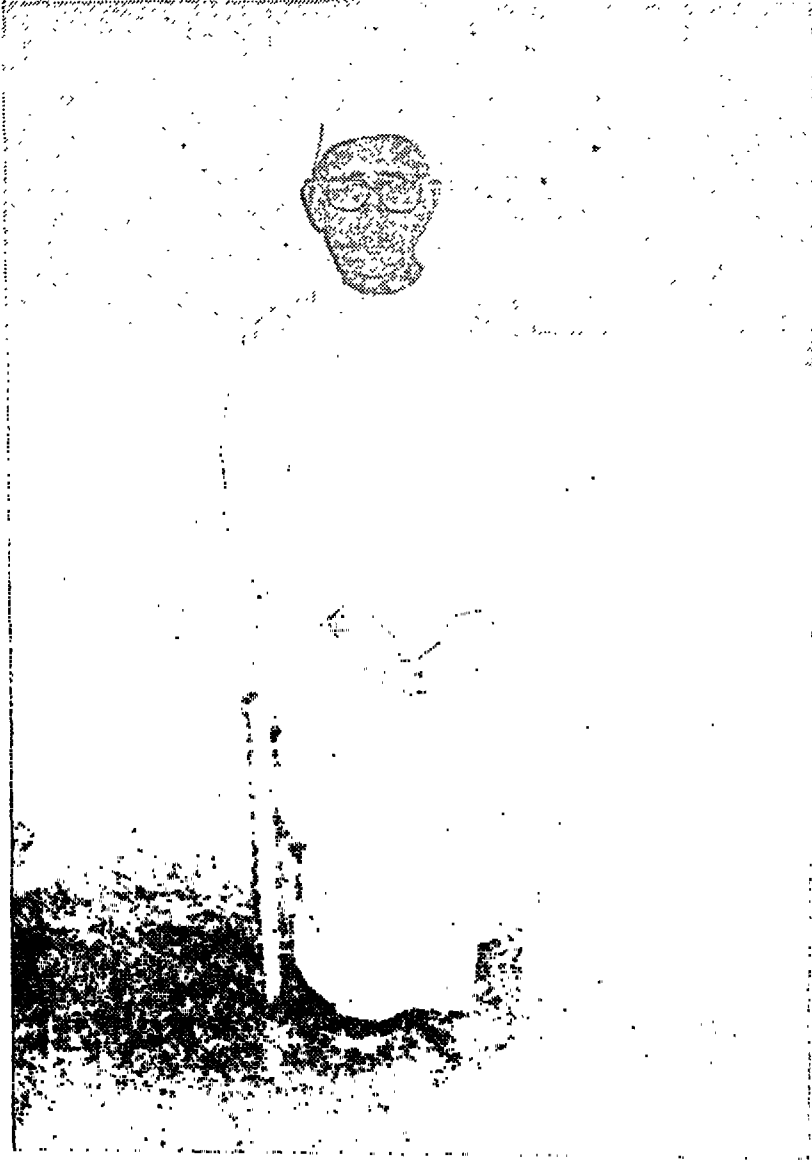
श्री रोशन लाल जैन

अध्यक्ष

सदस्य कार्यकारिणी
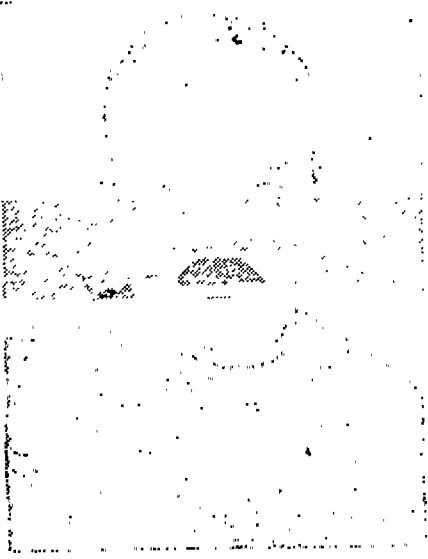
श्री रमेश चन्द जैन
उपाध्यक्ष

श्री धर्मपाल जैन
प्रबन्धक
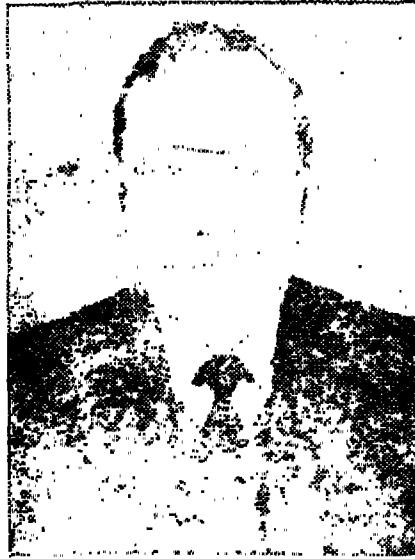
श्री धर्मचन्द जैन
मंत्री

श्री पवन कुमार जैन
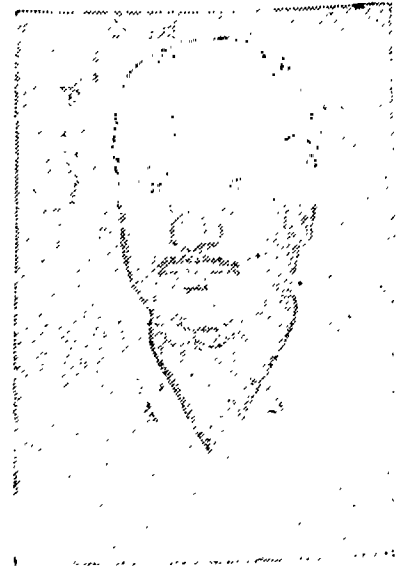
श्री श्यामलाल जैन
भण्डारी

सदस्य कार्यकारिणी
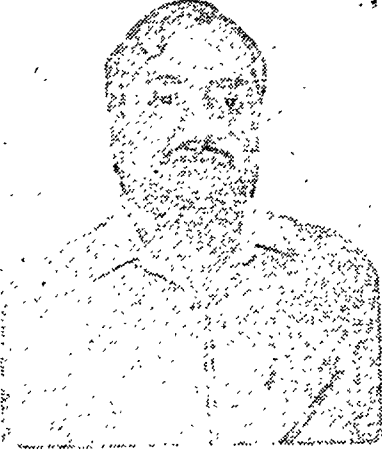
श्री सतीश चन्द जैन

श्री जगदीश प्रशाद जैन
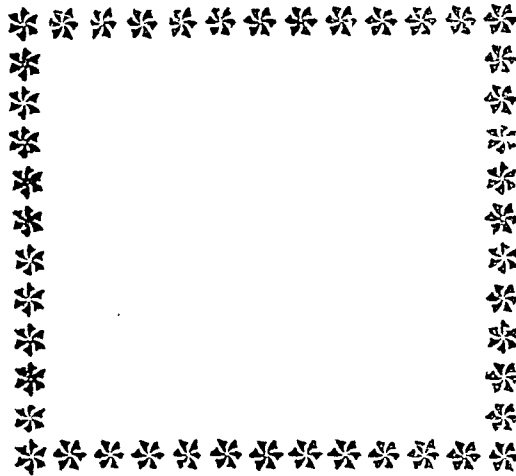
श्री अमर सिंह जैन

श्री विमल प्रसाद जैन
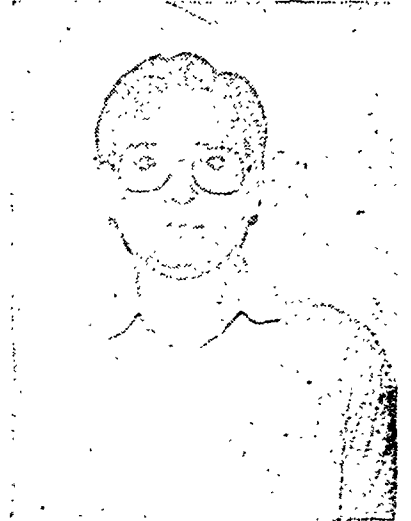
प्रमोद चन्द जैन

सदस्य कार्यकारिणी

श्री महेन्द्र कुमार जैन
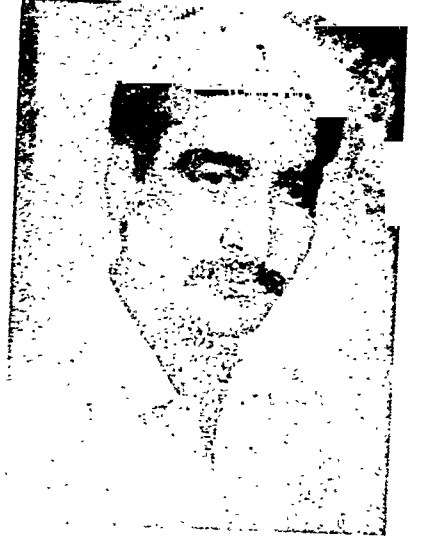
श्री अनिल कुमार जैन
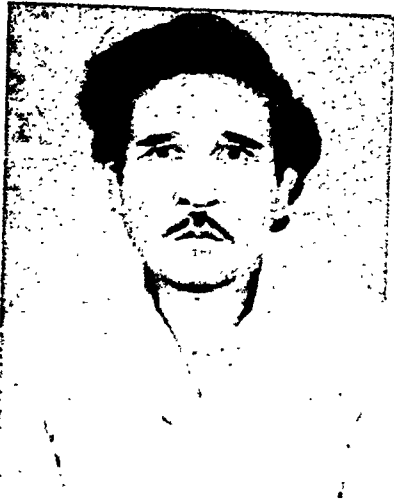
श्री रामकुमार जैन
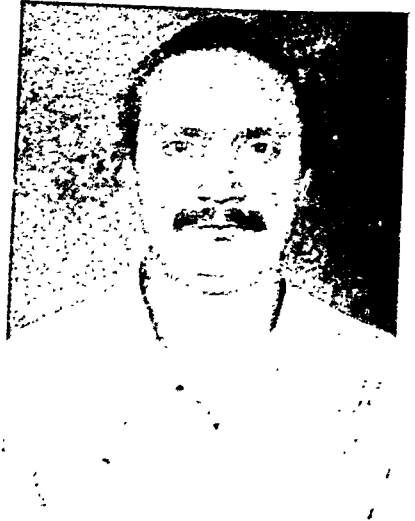
श्री नरेन्द्र कुमार जैन

ग्रुप फोटो
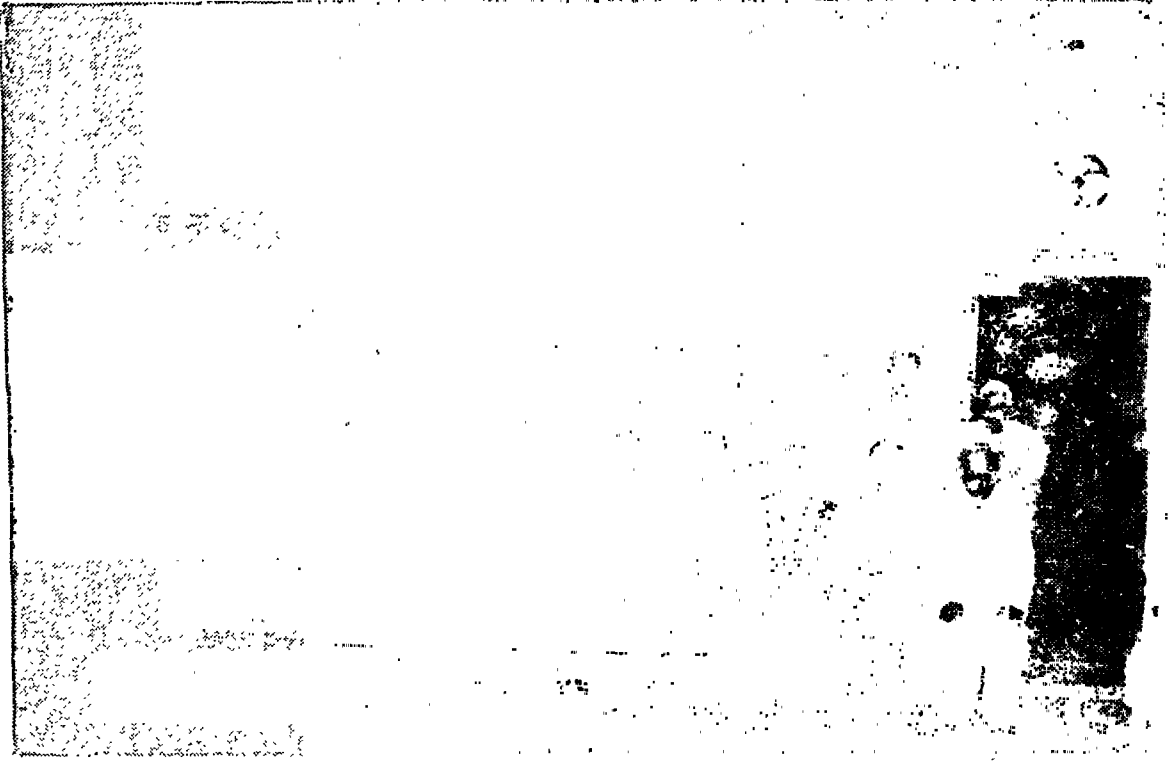
हस्पताल समिति कार्यकर्ता एवं सहयोगी

श्री आदिनाथ जैन सेवा मंडल
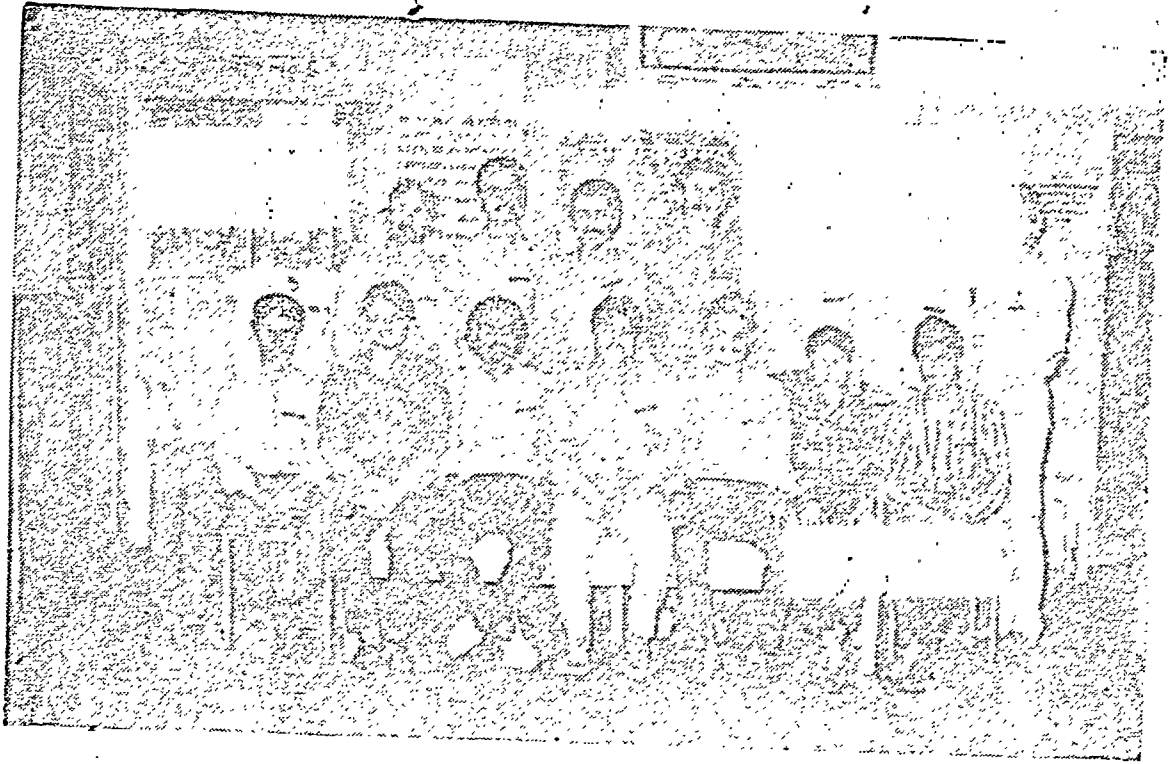
श्री बाल सेवा धार्मिक संगठन
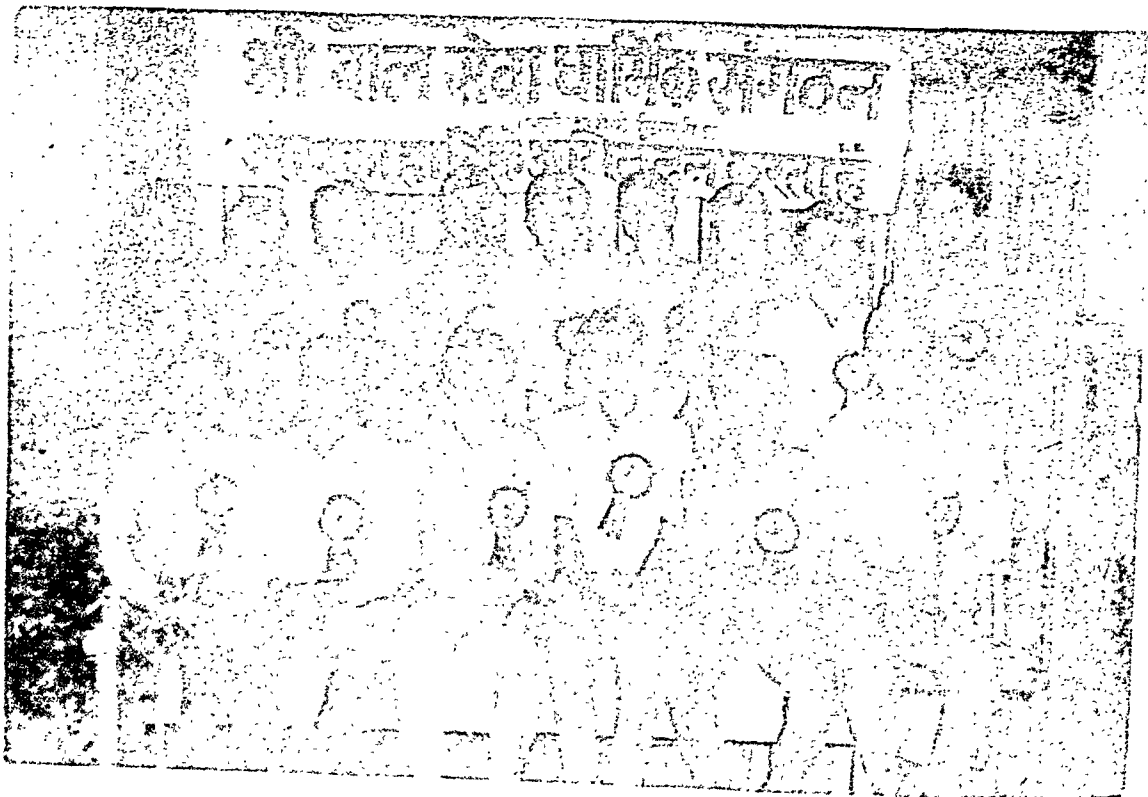
जैन मुनि 1008 स्व० श्री भागमल जी महाराज
धर्मार्थ औषधालय समिति (पंजीकृत)
पदाधिकारी एवं सदस्य कार्यकारिणी

1. श्री रोशन लाल जैन — अध्यक्ष
2. श्री रमेश चन्द जैन — उपाध्यक्ष
3. श्री धर्म चन्द जैन — मन्त्री
4. श्री धर्म पाल जैन — प्रबंन्धक
5. श्री पवन कुमार जैन — कोषाध्यक्ष
6. श्री श्याम लाल जैन — भण्डारी
7. श्री अमर सिंह जैन — सदस्य कार्यकारणी
8. श्री अनिल कुमार जैन — ,,
9. श्री बिमल कुमार जैन — ,,
10. श्री जगदीश प्रसाद जैन — ,,
11. श्री महेन्द्र कुमार जैन — ,,
12. श्री नरेन्द्र कुमार जैन — ,,
13. श्री प्रमोद चन्द जैन — ,,
14. श्री राम कुमार जैन — ,,
15. श्री सतीश चन्द जैन — ,,

कार्यकारिणी मंडल
श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा-शस्त्री पार्क, दिल्ली- 53

1. श्री जगदीश प्रसाद जैन — प्रधान
2. श्री रमेश चन्द जैन (कागजी) — उपप्रधान
3. श्री श्याम लाल जैन — मन्त्री
4. श्री बिमल कुमार जैन — उपमन्त्री
5. श्री पवन कुमार जैन — कोषाध्यक्ष
6. श्री रोशन लाल जैन — सदस्य गण
7. श्री मेकचन्द जैन — ,,
8. श्री धर्मचन्द जैन — ,,
9. श्री धर्मपाल जैन — ,,
10. श्री प्रमोद चन्द जैन — ,,
11. श्री अमर सिंह जैन — ,,
12. श्री रमेश चन्द (दलाल) — ,,
13. श्री महेन्द्र कुमार जैन — ,,

श्री भागमल जी महाराज धर्मार्थ औषधालय

आय-व्यय का विवरण 1988-89

(आय)		(व्यय)	
पिछला शेषधन नकद	6265.80	बिजली खर्च	6004.04
बैंक	31302.37	सम्पतियाँ	5264.00
दान खाता	66,779.00	दवाई	77049.10
बहिरंग पर्ची आय	1,24,731.00	विज्ञापन	226.00
रद्दी बिक्री	564.00	रख-रखाव	2577.00
गुल्लक	6,033.00	एक्स-रे	15891.63
		प्रिटिंग व स्टेशनरी	2194.80
		यात्रा भत्ता	68.00
		कर्मचारी कल्याण	3378.50
		विभिन्न खर्चे	1021.50
		वेतन	99,990.00
		बीमा	1,057.00
		आखों का विभाग	5,440.00
		डाक खर्च	20.00
		शेष राशि नकद	2697.91
		बैंक	12795.69
	2,35,675.17		2,35,675.17

31.3.1989 तक

श्री भागमल जी महाराज धर्मार्थ औषधालय

(भवन निर्माण) आय व्यय का विवरण **(प्रथम तल एवं द्वितीय तल)**

(आय)

विवरण	राशि
दान आय	421895.00
गोलक से प्राप्त	2733.00
पुराने सामान की बिक्री	1191.00
	425819.00

(व्यय)

क्र.	विवरण	राशि
1.	शिलान्यास समारोह (22/5/88)	17372.25
2.	चोखटें	13618.00
3.	सैक्शन विन्डो	17813.75
4.	इटैं व टाइलें	32290.00
5.	सीमेन्ट	50650.00
6.	मिला जुला खर्च	3235.10
7.	रोड़ी बदरपुर	30632.00
8.	सरिया	106001.00
9.	लोहे का तार	883.00
10.	रेत	865.00
11.	सरिया बंधाई मजदूरी	4170.00
14.	विद्युत का सामान	6042.00
15.	पेन्ट का सामान	388.00
16.	सेनिटरी का सामान	18560.30
17.	ठेकेदार	51223.00
18.	श्री एस.एस. जैन सभा	3000.00
19.	शेष राशि बैंक	66443.00
20.	नकद	2632.60
		425819.00

श्री आदिनाथ जैन सेवा मण्डल

संक्षिप्त परिचय

एक लम्बे समय से शास्त्री पार्क में किसी युवा सगंठन की कमी अनुभव की जा रही थी उस कमी को महसूस करते हुए कुछ उत्साही युवक आगे आए और एक धार्मिक व सामाजिक जागरण हेतु एक संगठन की नींव रखी गई। इस संगठन का नामकरण जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान के नाम पर श्री आदिनाथ जैन सेवा मण्डल रखा गया।

श्री आदिनाथ जैन सेवा मण्डल की स्थापना 12 सितम्बर 1986 को शास्त्री पार्क में की गई। इस मण्डल की स्थापना में श्री एस.एस. जैन सभा शास्त्री पार्क के सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। तथा यह मण्डल श्री एस.एय. जैन सभा शस्त्री पार्क के अन्र्तगत अपना कार्य कर रहा है। मण्डल का प्रमुख उद्देश्य युवकों में सामाजिक, धार्मिक उत्थान तथा बौद्धिक विकास करना है। मण्डल द्वारा विभिन्न धार्मिक अवसरों पर कार्यक्रम किए जाते रहे हैं। श्री आदिनाथ भगवान की जयन्ती पर अखण्ड जाप का आयोजन, महावीर जयन्ती व दिगम्बर जैन रथ यात्रा के अवसरों पर धार्मिक झांकियों का आयोजन व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर किए जाते रहे हैं।

मण्डल की प्रगति की दिशा में एक अध्याय उस समय जुड़ा जब मण्डल द्वारा जुलाई 1987 में एक वाचनालय की स्थापना की गई। जिसका नाम श्री आदिनाथ पुस्तकालय एवं वाचनालय रखा गया। इस वाचनालय में प्रतिदिन हिन्दी व अंग्रेजी के प्रमुख समाचार पत्र, युवकों के लिये रोजगार समाचार एवं साप्ताहिक तथा मासिक पत्रिकाएँ आती हैं। वर्तमान में वाचनालय के विस्तार के कार्यक्रम तथा सम्भावनाओं पर विचार किया जा रहा है।

आदिनाथ जैन सेवा मण्डल के द्वारा एक बर्तन भण्डार का संचालन भी किया गया है। जो शादी-विवाह व विभिन्न धार्मिक उत्सवों के लिए बर्तन देता है। परन्तु कुछ बर्तनों का अभी अभाव है।

आप सभी धार्मिक महानुभावों से अनुरोध है कि वाचनालय के विस्तार एवं सफलताओं के लिए तथा बर्तन भण्डार के विकास के लिए अपने विचार-सुझाव व अपेक्षित सहयोग से हमारा मार्गदर्शन करें।

आदिनाथ जैन सेवा मण्डल
शास्त्री पार्क, दिल्ली- 53

जिनका सहयोग चिरस्मरणीय रहेगा
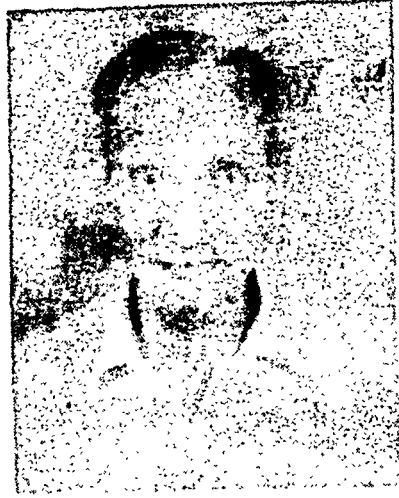
उदार हृदयी दानवीर स्व० श्री चमन लाल जी जैन

उदार हृदयी, दानवीर स्व० श्री चमन लाल जी जैन का जन्म सन् १९२० में स्यालकोट (पाकिस्तान)में स्व० सुश्रावक श्री बाल मुकन्द जी जैन व श्रीमति धन्न देवी जी जैन के यहाँ हुआ। आपने स्यालकोट में ही शिक्षा ग्रहण की। विभाजन के समय आप सपरिवार स्यालकोट छोड़ कर १९४७ में दिल्ली आ बसे। आपने अपने बुद्धि कोशल द्वारा ज्वैलरी के व्यापार में एक अच्छा स्थान बनाया। आपने जहाँ धंन का अर्जन सीखा वहीं आप समय-समय पर सत्कार्यों में उसका विसर्जन भी करते थे। निर्धन, अनाथ, विधवाओं को सहयोग देना आपकी प्रमुख प्रवृत्ति थी।

आपने अपने जीवन में धन के साथ यश एवं प्रतिष्ठा भी प्राप्त की। आप अनेक धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं से जुड़े थे। जिनमें प्रमुख हैं– महासति श्री मोहन देवी जैन ट्रस्ट, भगवान महावीर हास्पिटल रोहिणी, जैन मुनि स्व० श्री भागमल जी महाराज हस्पताल शास्त्री पार्क (संरक्षक)। आपके दो सुयोग्य पुत्र हैं– श्री सुशील कुमार जैन, श्री विजय कुमार जैन तथा दो पुत्रियाँ हैं– श्रीमति सरला जैन, श्रीमति सुमन जैन।

आपका गत 3.2.89 को अकस्मात निधन हो गया। आपके निधन से जैन मुनिश्री भागमल जी महाराज हस्पताल के प्रत्येक सदस्य को बड़ा आघात लगा। शासनेश प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

प्रबन्धक
धर्मपाल जैन

वयोवृद्ध सुश्रावक श्री रोशन लाल जैन

व्योवृद्ध सुश्रावक श्री रोशन लाल जी जैन आपका जन्म माघ बदी ७ वि. सं० १९६७ को ग्राम तीतर वाड़ा, जिला मुजफ्फर नगर यू० पी० में सेठ श्री मुरारी लाल जी जैन व श्रीमति भगवान देई के यहाँ हुआ। आप वि. सं. १९९० में व्यापार हेतु दिल्ली आए। यहाँ आपने कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। आपने हमेशा व्यापार में ईमानदारी व प्रामाणिकता रखी।

आपकी साधु-सन्तों, शास्त्रों तथा धर्म पर अटूट श्रद्धा है। आपने अनेक शास्त्रों एवं थोकड़ों का अध्ययन किया है। आप शान्त प्रकृति के हैं।

आप जैन मुनिश्री भागमल जी महाराज हस्पताल, शास्त्री पार्क के गत दस वर्षों से प्रधान पद पर हैं। आपके सफल नेतृत्व में हस्पताल व शास्त्री पार्क समाज ने उल्लेखनीय प्रगति की है।

शासनेश प्रभु से यही प्रार्थना है कि आप उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति करें।

प्रबन्धक
धर्मपाल जैन

स्वागताध्यक्ष श्री नरेश चन्द जैन (नीलम टायर ट्यूब वाले) उद्घाटनकर्ता श्री दयाचन्द जैन दोघट वाले
का स्वागत करते हुए
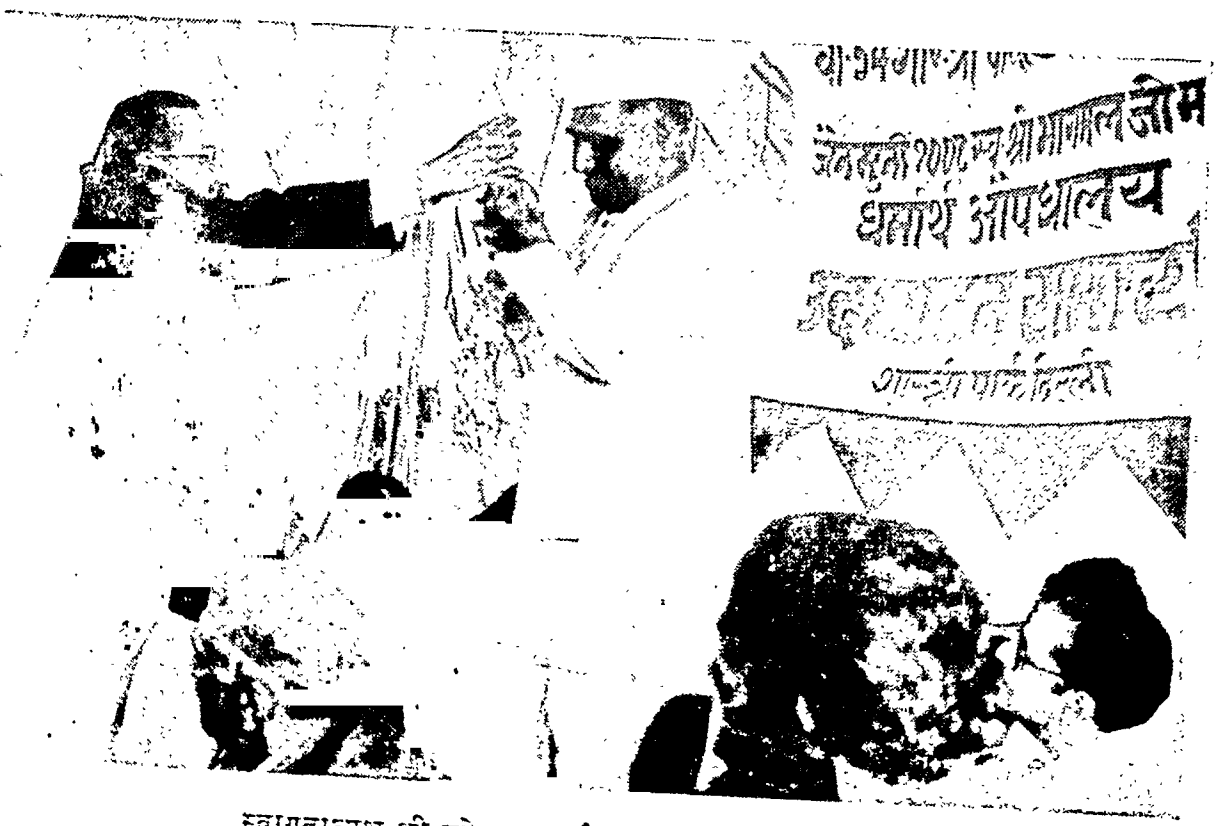
स्वागताध्यक्ष श्री नरेश चन्द जैन नीलम टायर ट्यूब वाले
श्री प्रकाश चंद जैन भू० पू० निगम पार्षद का स्वागत करते हुए

श्री राम दयाल जी जैन

(बरेली वाले) हस्पताल भवन का शिलान्यास करते हुए

श्री रामेश्वर दयाल जैन

विवेक विहार वाले, हस्पताल भवन के शिलान्यास में सहयोग करते हुए

श्री चमनलाल
तिमारपुर वा.
हस्पताल लेब रेट्री
उद्घाटन करते हु

श्रीमती सुदर्शन जैन
ध० पत्नी श्री सुकमाल
चन्द जैन तित्तरवाडे वाले
एक्स-रे विभाग का
उद्घाटन करते हुए
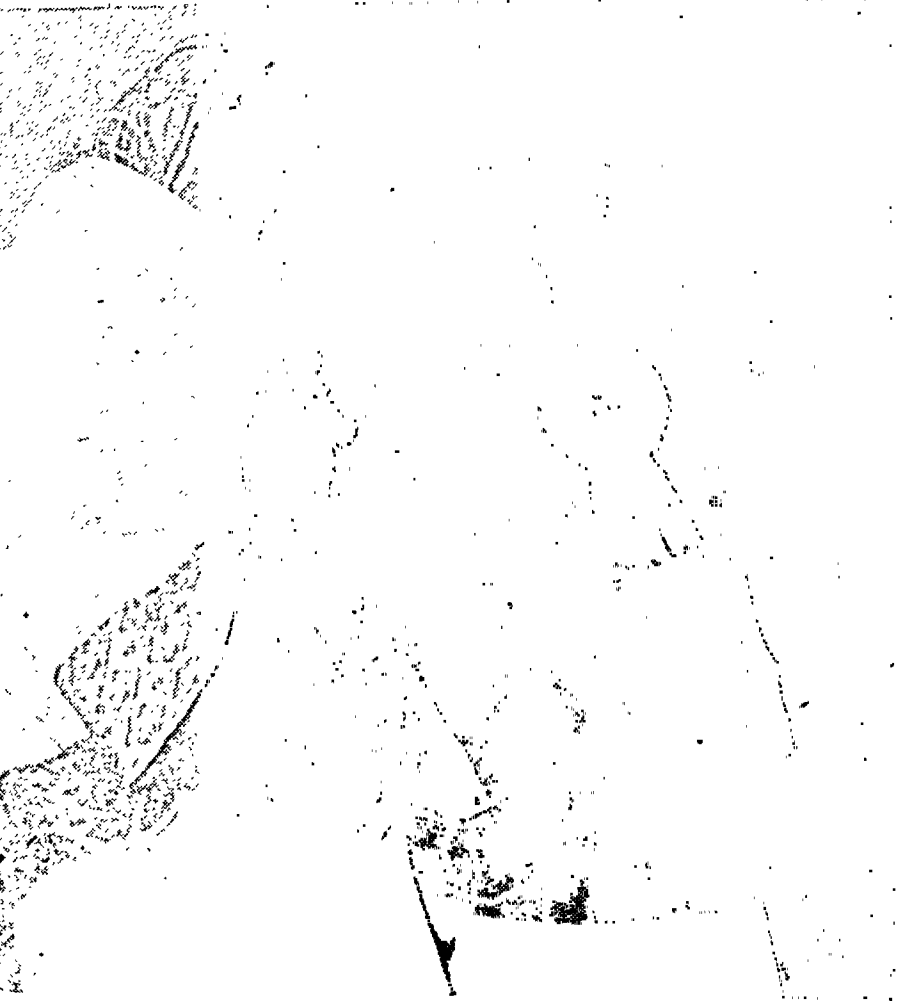
श्रीमती शान्ती राठी (तत्कालीन शिक्षा राज्य मंत्री, हरियाणा) का स्वागत करते हुए सुश्रावक श्री ओमप्रकाश जैन (गाजियाबाद वाले)

श्री प्यारेलाल अग्रवाल, घी वाले (चेयरमैन, स्टैंडिग कमेटी, नगर निगम शाहदरा क्षेत्र) का स्वागत करते हुए सुश्रावक श्री हजारीलाल जैन
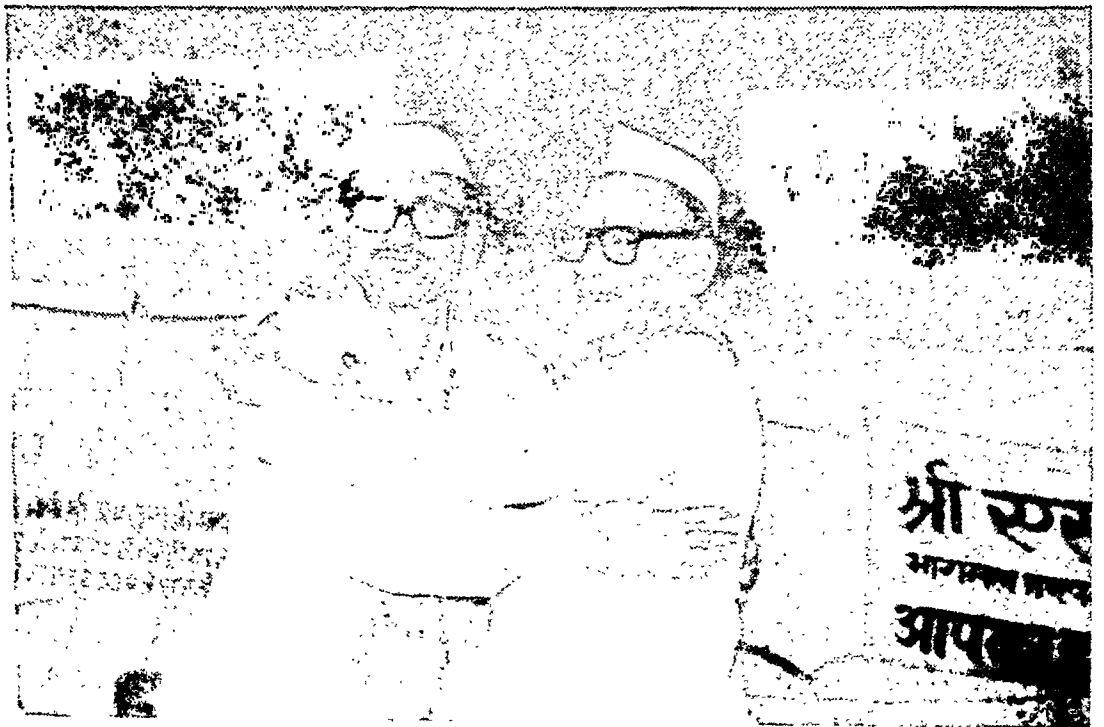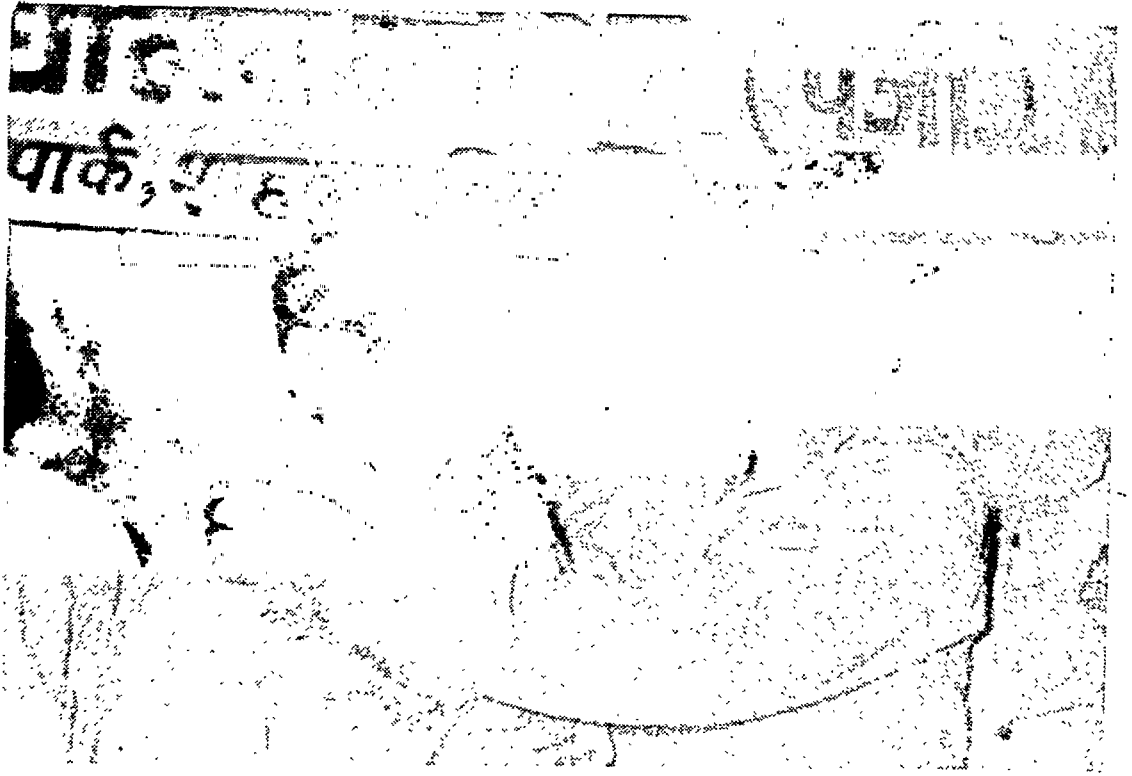
सूचना एवं प्रसारण तथा संसदीय मामलों के मंत्री श्री एच० के० एल० भगत का स्वागत करते हुए श्री धर्मपाल जैन प्रबन्धक
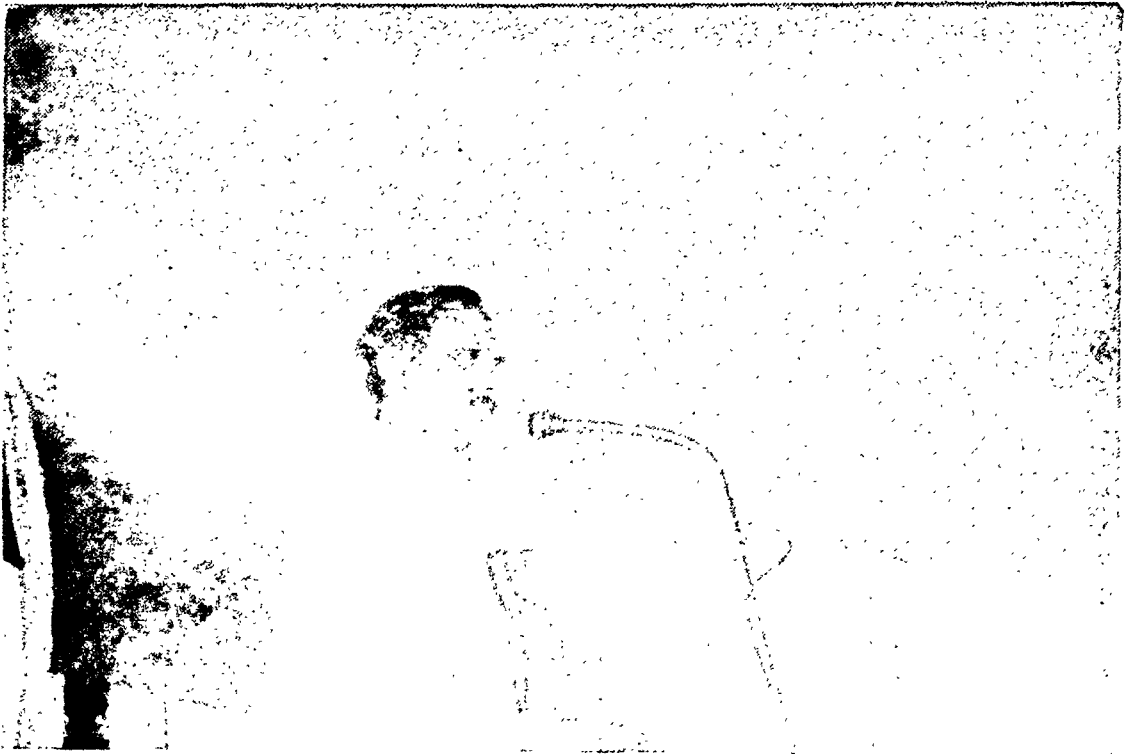
सांसद श्री जय प्रकाश अग्रवाल सभा को सम्बोधित करते हुए
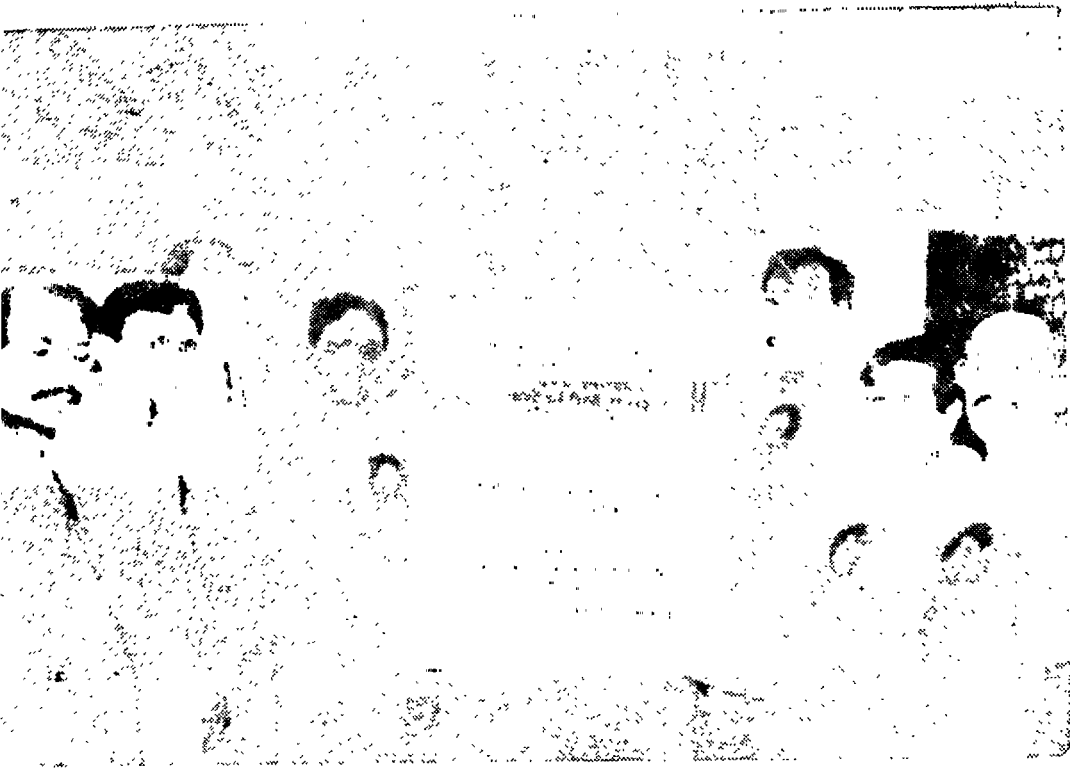
हस्पताल भवन के प्रथम तल के शिलान्यासकर्ता श्री सत्यभूषण जैन
श्री जे० के० जैन, उप-महासचिव अखिल भारतीय कांग्रेस
कमेटी (आई) के साथ

श्री हरीश चन्द जैन (तत्कालीन निगम पार्षद) का स्वागत करते हुए
श्री पवन कुमार जैन

हस्पताल के विभिन्न कार्यक्रमों में लिये गये प्रमुख चित्र

हस्पताल के विभिन्न कार्यक्रमों में लिये गये प्रमुख चित्र

परम सेवा भावी श्री प्रेम सुख जी महाराज को उप-प्रवर्त्तक पद से अलंकृत होने पर
दानवीर सेठ श्री जे० डी० जैन अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए
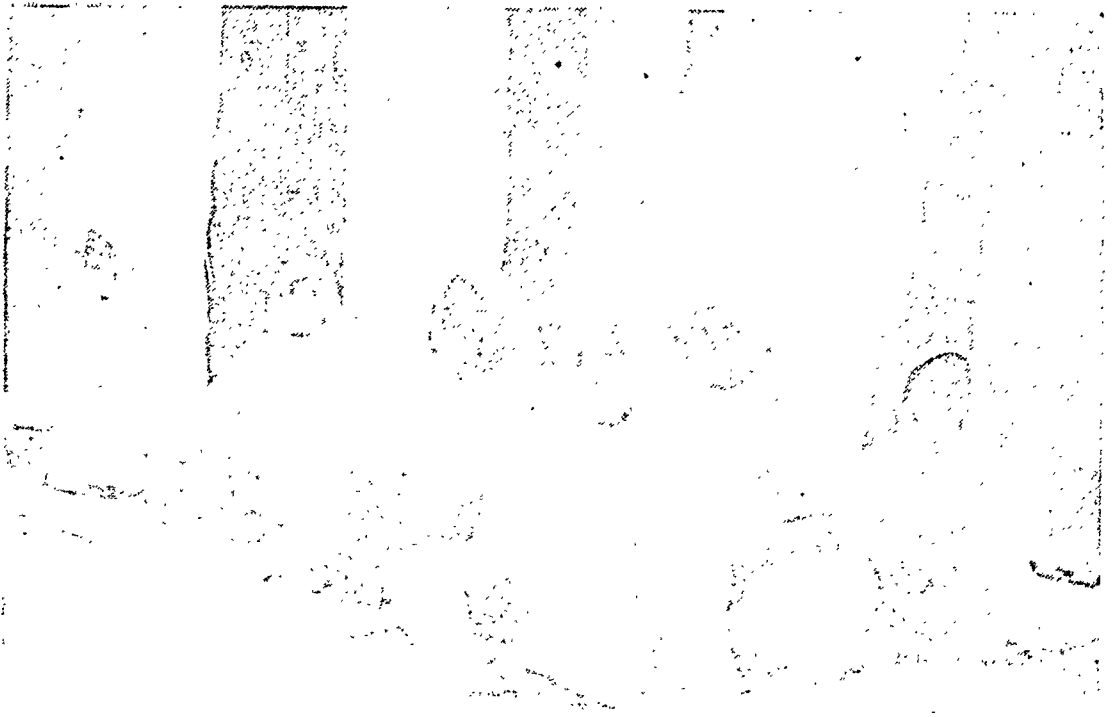
हस्पताल के कार्यक्रम में विराजित साध्वी मंडल

हस्पताल में उपलब्ध सेवाओं के चित्र

हस्पताल का वर्तमान स्टाफ
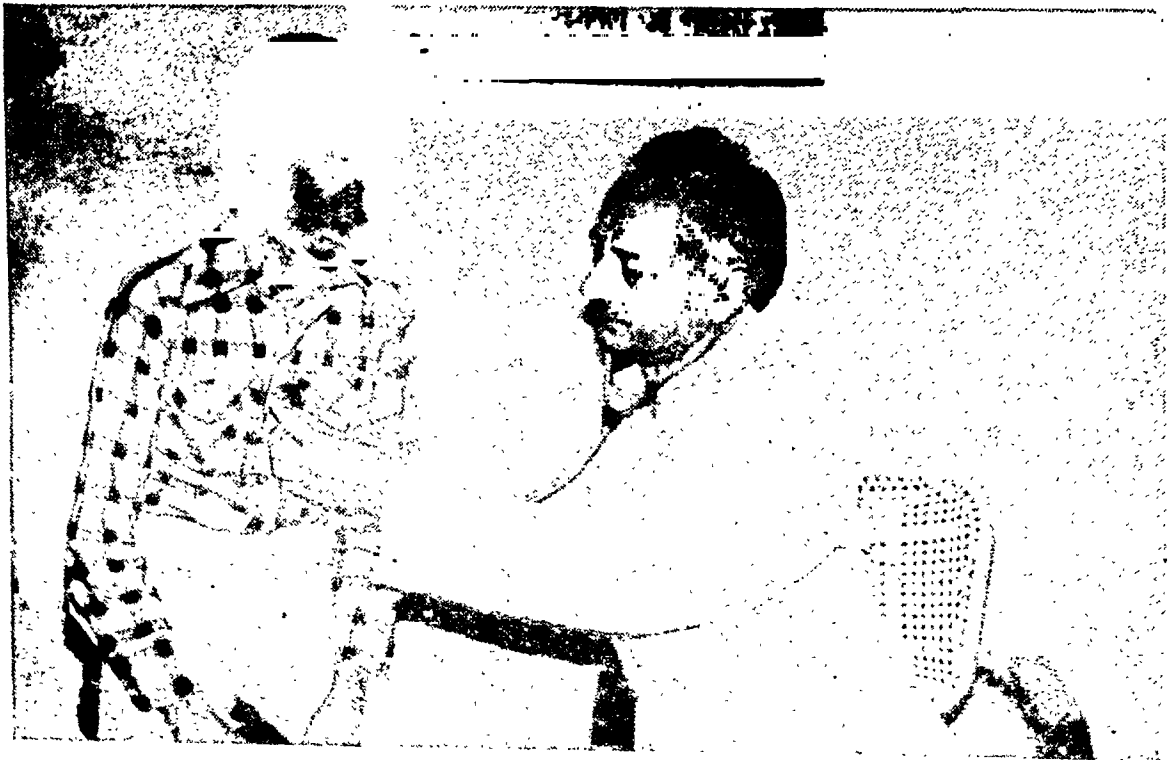
डा० आर० एल० हांडा रोगी की परीक्षा करते हुए

डा० डी० एस० ढगत रोगी परीक्षा करते हुए

हस्पताल के जनरल-वार्ड का दृश्य

नेत्र चिकित्सक
डा० वी० पी० गुप्ता
परीक्षण करते हुए

आंखों के आपरेशन
का दृश्य

एक्स-रे विभाग का दृश्य

डा० बी० एस० ढगत
MBBS DA.

डा० सुधीर जैन
MBBS M D.

डा. सी. बी. जैन
L. D. S.

डा. वी. पी. गुप्ता
MBBS D.O.
MAMS (VIEANA)

हमारे विशेष सहयोगी

स्व० श्री चमन लाल जैन

हमारे विशेष सहयोगी

श्री रामदयाल जैन (गाजियाबाद)
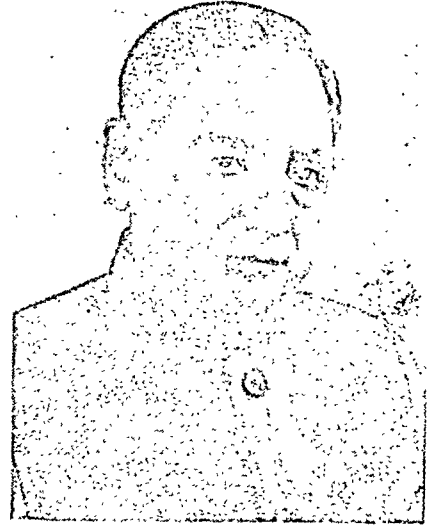
श्री रामेश्वर दयाल जैन
अध्यक्ष, दिल्ली जैन महासंघ
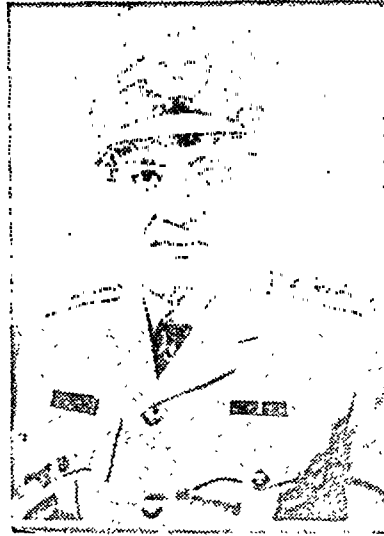
श्री जे० डी० जैन
उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन कांफ्रेंस

श्री सुभाष चन्द्र जैन (कागजी)

श्री वीर सैन जैन (का

स्थविर पद विभूषित स्व० श्री भागमल जी महाराज

एक परिचय रवीन्द्र मुनि शास्त्री

प्रातः स्मरणीय स्थविर पद विभूषित बाल ब्रह्मचारी स्व० श्री भागमल जी महाराज का जन्म ग्राम पुरखास जिला सोनीपत (हरियाणा) में फाल्गुन शुक्ला पंचमी वि० सं० 1938 में चौधरी राम चरण जी के यहाँ माता श्रीमति खेमो देवी जी की कुक्षि से हुआ। आपका बचपन का नाम लाल सिंह रखा गया। जैसे लाल बड़ा कीमती होता है उसी प्रकार आप भी अनमोल थे।

आपका बाल्यकाल बड़े ही सुंदर ढंग से बीता। यौवन में प्रवेश करने पर भी आपका जीवन कमलवत् था। जैसे कमल जल में रहता हुआ भी जल में लिप्त नहीं होता। आप भी कभी सांसारिक कार्यों में लिप्त नहीं रहे। यौवन की दहलीज पर जब आपने प्रवेश किया तो आपके परिवार वालों ने आप से विवाह का अति आग्रह किया परन्तु आपने दृढ़ता के साथ विवाह के बंधन में बंधने से इंकार कर दिया।

गुरु मिलन – एक बार पुरखास ग्राम में तपो निधि सम्राट श्री गणपति राय जी म० व गुरुवर्य मधुर वक्ता श्री तेजराम जी म० अपने शिष्य समुदाय सहित पधारे। श्री तेज राम जी म० के प्रवचनों का क्रम प्रारम्भ हुआ। गाँव के जैन-जैनेतर बिना किसी भेद के प्रवचनों के श्रवण के लिए आने लगे। सुनने वालों में युवक लाल सिंह भी उपस्थित थे। युवक लाल सिंह ने गुरु देव के मुख से संसार की असारता, नश्वरता तथा निर्मोही राजा की मोह रहितता का सुंदर वृत्तान्त सुना तो आपके मन में वैराग्य की धारा प्रवाहित हो गई। आपने गुरुदेव श्री तेज राम जी म० से दीक्षा प्रदान करने की भावना प्रकट की। अनेक व्यक्तियों ने आपको संयम पथ के विभिन्न कष्टों एवं परिषहों का उल्लेख कर आपको डराना चाहा। परन्तु आपने सभी को एक ही उत्तर दिया – "गुरुदेव की कृपा से मुझे संयम पथ का कोई भी कष्ट विचलित नहीं कर सकता। सत्य ही है जो साहसी एवं दृढ़ श्रद्धालु होते हैं उनके पथ में कोई भी बाधा उपस्थित नहीं होती।

आपके परिवार वाले मोहवश आपको दीक्षा की आज्ञा प्रदान करना नहीं चाहते थे। आपको दीक्षा की आज्ञा प्राप्त करने में काफी संघर्ष करना पड़ा। अन्ततः आपने दीक्षा की आज्ञा प्राप्त कर ही ली।

दीक्षा – फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशी वि० सं० 1962 में काहनी (जिला रोहतक, हरियाणा) में शुभ मुहूर्त एवं शुभ घड़ी में विशाल जन समूह के बीच महान प्रतापी गुरुदेव श्री तेजराम जी म० के चरणों में जैन भगवती दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा के उपरान्त आपका नाम मुनि श्री भागमल जी म० रखा गया। आपके ज्येष्ठ गुरु भ्राता मुनि श्री राजमल जी म० की दीक्षा आप से केवल एक सप्ताह पूर्व ही हुई थी। दोनों गुरु भ्राताओं ने दत्तचित्त होकर शास्त्राभ्यास किया एवं गुरुओं की सेवा में जुट गए। ज्यों-ज्यों साधना के पथ पर आपके चरण बढ़ते गए, आपके साधक जीवन में निखार आता गया। आपने हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तर-प्रदेश, राजस्थान, मध्य-प्रदेश, बम्बई, गुजरात आदि प्रान्तों में पाद विहार कर जन-जन के बीच जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

अर्द्धशतावधानी पं० रत्न श्री त्रिलोक चन्द जी महाराज, आपका जन्म श्रावण शुक्ला तृतीया वि० सं० 1961 में खुडाला (जोधपुर – राजस्थान) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री धन रुप जी व मातुश्री यश वन्ती देवी था। आपने 17 वर्ष की आयु में पंजाब प्रदेश की नालागढ़ रियासत में आचार्य श्री कांशीराम जी महाराज के सान्निध्य में विशाल समारोह पूर्वक मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी वि० सं० 1978 में दीक्षा ग्रहण की तथा आप बाल ब्रह्मचारी श्री भागमल जी महाराज के शिष्य बने। आपकी दीक्षा में नालागढ़ नरेश भी उपस्थित थे जिन्होंने राज्य भर में जीव हिसा पर प्रतिबन्ध की घोषणा की।

प्रवर्तक – वि० सं० 1992 में फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को होशियारपुर (पंजाब) में युवाचार्य श्री कांशी राम जी म० को आचार्य पद, पूज्य श्री भागमल जी म० को प्रवर्तक पद तथा श्री त्रिलोक चन्द जी म० को पण्डित रत्न की उपाधि प्रदान की गई। आप श्री ने प्रवर्तक पद के दायित्व को सुंदर ढंग से निभाया।

चातुर्मास – आपने विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न शहरों में चातुर्मास किया। जिन में प्रमुख चातुर्मास इस प्रकार हैं – काँधला, पटियाला, समाना, साढ़ोरा, मुनक, पुरखास, चाँदनी चौक, अमृतसर, स्यालकोट, जीरा, पसरूर, कपूरथला, रोपड़, जैतों, नालागढ़, काँधला, काछवा, राहों पसरूर, जैतों, लाहौर, जयपुर, आगरा, काँधला, कैथल, करनाल, हिसार, अहमद नगर काँदा, वाड़ी (बम्बई), राजकोट, सादड़ी, उदयपुर, चाँदनी चौक, करनाल, रामामण्डी, फरीदकोट, गीदड़बहा, सदरबाजार (दिल्ली), सब्जी मण्डी, सदर बाजार। सदर में आपने स्थिरवास किया और अनेक वर्षों तक विराजमान रहे।

महामना का महाप्रयाण – आप सन् 1971 के प्रारम्भ में ही अस्वस्थ चल रहे थे। जोड़ों में दर्द एवं वायु विकार का विशेष प्रकोप चल रहा था। आप वायु विकार के कारण 3-4 रोज तक मूर्छित रहे। डॉ० जी० बी० जैन व वैद्य के औषधोपचार के द्वारा आप स्वस्थ हो गए। परन्तु आपने अपने निकटस्थ मुनियों से कहा – "अगर मुझे पुन: मूर्छा आ जाए तो मेरा उपचार न करा कर संथारा करा देना। अब मैं चन्द दिनों का ही मेहमान हूँ।" आपको अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था।

मार्च मास के प्रारम्भ में आप पुन: पूर्ववत् मूर्छित हो गए। उपचार चला परन्तु कोई लाभ न हुआ। डॉ० जी० बी० जैन को बुलाया गया। उन्होंने कहा – महाराज श्री का ब्लडप्रैशर लो होता जा रहा है। अत: बचने की आशा कम है। सभी मुनिगण एवं भक्त उदास हो गए। परन्तु मौत ऐसी बला है जो टाले नहीं टलती। 4-3-71 बुद्धवार को रात्रि 3 बजकर 20 मिनट पर आपका स्वर्गवास हो गया। आपके स्वर्गवास का समाचार आकाशवाणी व दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किया गया। विशाल जन समूह आपके अन्तिम दर्शनों के लिए उमड़ पड़ा।

दूसरे दिन एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमें दिल्ली व आस-पास के प्रदेशों के लोग विपुल संख्या में उपस्थित थे। कृत्रिम पुष्पों की हैलीकोप्टर से वर्षा की गई। हजारों की संख्या में जनता अश्रुपूरित नेत्रों से गुरुदेव के जय-जयकारे करती हुई निगम बोध घाट पर गई। वहाँ विशिष्ट चबूतरे पर चंदन चर्चित चिता पर गुरुदेव का पार्थिव शरीर रखा गया। आकाश में घटाएँ छा गई। सुहावना मौसम हो गया। चिता में अग्नि प्रज्जवलित की गई। आकाश में ऊपर उठती लपटों ने पार्थिव शरीर को घेर लिया और शेष रह गई भस्म की ढेरी।

तत्पश्चात शोक सभाएँ हुई और श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गई। यद्यपि आज गुरुदेव हमारे मध्य नहीं हैं परन्तु उनके उपदेश, शिक्षा, यश अब भी साकार होकर हमें मोक्ष मार्ग पर चलने की सतत् प्रेरणा प्रदान कर रहे है।

बाल ब्रह्मचारी स्थविर पदविभूषित गुणधाम।
ऐसे श्री गुरुदेव को वारम्वार प्रणाम॥

प्रेरणा प्रदीप– श्री भागमल जी म. सा.

कर्माधीन होकर संसारी जीव चारगति चौरासी लाख जीवा योनियों में अनंतकाल से परिभ्रमण करता आ रहा है। चाहे किसी गति में या किसी भी योनी के हों सभी जीव दुःख से बचना चाहते हैं। सब केलिए सुख प्रिय है। देव लोक में रहने वाले देव जिन के पास अपरम्पार धन वैभव रूप ऐशो आराम के साधन होने पर भी वे सुख के लिए लालायित हैं। क्योंकि उन में भी परिग्रह संज्ञा अधिक होने के कारण वे भी सुखी नहीं हैं।

तीर्थंकर भगवन्त ने तो पग-२ पर मानव जीवन की महत्ता का वर्णन किया है साथ में संसार के सभी महापुरुष तीर्थंकर भगवन्त की वाणी का अनुसरण करते हुए मानव जीवन की महत्ता को गाते हैं। कारण यह है कि चारगति में मानव जीवन ही एक ऐसा जीवन है जो स्वयं पर कल्याण कर सकता है। स्वयं सम्पूर्ण कर्मों को काट कर शाश्वत पद पा सकता है तथा दूसरे को भी शाश्वत पद का मार्ग दिखा सकता है। वैसे तो छोटे मोटे जीव भी अपना पेट भर लेते हैं।

मानव भी इन्हीं बातों में सीमित रहता है तो उसकी सार्थकता क्या ? मानव केवल अपनी ही सेवा न करके दूसरों के हित के लिए कार्य करता है। वह दूसरे के दुःख दर्द परेशानी को मिटा सकता है। अतः महान् है।

आगम शास्त्र व इतिहास का अवलोकन करते हैं तो हम पाते हैं कि पर कल्याण के लिए अपने सर्वस्व तक को समर्पित करने वाले लाखों मानव हुए हैं और हैं भी।

महाप्रभु वीर ने महाव्रतधारी सन्तों को अनन्त-२ जीवों का रक्षक कहा है क्योंकि वे ६ जीवनिकायों के रक्षक होते हैं।

परमश्रद्धेय महास्थविर सरलमना श्री भागमल जी म. उत्तर भारत के महान् सन्त रत्न होने के नाते प्राणिमात्र के प्रति दया करूणा तो रखते ही थे परन्तु दीन हीन अनाथ अपाहिज व दुःख दर्द से पीड़ित मानवता की सेवा के लिए विशेष प्रोत्साहन देते थे।

ईसा ने भी कहा मानव की सेवा ही भगवान की सेवा है। इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब ने भी कहा इन्सान का दिल अल्लाह ताला का घर है।

सरलमना महास्थविर श्री भागमल जी म. ने भी पीड़ित मानवता की सेवा के इस पुनीत कार्य को अपना आदर्श बनाया। परम सेवाभावी उप प्रवर्तक श्री प्रेमसुख जी महाराज उनके कार्यों के प्रेरणा श्रोत बन गए हैं। श्री प्रेमसुख जी म. ने दिल्ली हरियाणा उत्तर प्रदेश आदि क्षेत्रों में विचरण कर जैन धर्म के प्रभावना की। वहां आपने अनेक स्थानों पर धर्मार्थ औषधालय खुलवाकर सराहनीय कार्य किये हैं। आपकी प्रेरणा से

दिल्ली हरियाणा के अनेक स्थान पर धर्म स्थानों का निर्माण भी हो चुका है। इसी तरह आप विद्यालय की स्थापना के लिए भी प्रयत्नशील हैं।

श्री भागमल जी म. सा. जैन धर्मार्थ औषधालय 10 वर्षों से निरन्तर सेवारत है। अब 11 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। मेरी तो शासनेश महाप्रभु से यही प्रार्थना है कि यह जन- 2 का सेवा सदन सदियों तक दु:खी व आर्तमानवता की सेवा करता रहे। ऐसी हार्दिक मंगल कामनाओं तथा हार्दिक सद्भावनाओं के साथ संस्था के प्रेरणा श्रोत, तथा संस्था से सम्बन्धित सभी अधिकारी गण सदस्यगणों के साथ हमारी अनन्त अनन्त मंगल कामनायें हैं।

श्रमणसंघीय सलाहकार
मुनि सुमति प्रकाश
तीरू **कोइलूर तामिलनाडू**

सन्त हों तो ऐसे हों

लेखक : शान एक जिन शासन उपप्रवर्तक परमसेवाभावी श्री प्रेमसुखजी म० के सुशिष्य श्री उपेन्द्र मुनि जी म० "प्रभाकर"

गुरु महाराज के परमपावन सान्निध्य में रहकर जो कुछ मैंने देखा है, उनके महान व्यक्तित्व का इस तुच्छ लेखनी से वर्णन नहीं किया जा सकता। अनेकों चमत्कार एवं सदाचार की आदर्श घटनाएँ मेरे को याद हैं – जिनमें से कुछ का वर्णन दिया जा रहा है।

प्रथम सेवा का महान गुण – जिस वैयावृत्य शब्द की चर्चा भगवान **महावीर** एवं विश्व के अन्य विचारकों ने की एवं जिसका अनुगमन अतीव दुर्लभ बताया गया है। वह सेवा भाव का **गुण श्री गुरुदेव** में सहज ही मिल जाता है। अध्यात्म-योगी महात्मा भर्तृहरि ने कहा –

मौनान्मूकः प्रवचनपटुर्वातुलो **जल्पकोवा,**
धृष्टः पार्श्वे वसति च तदा दूरतश्चाप्रगल्भः।
क्षान्त्या भीरुर्सदि न सहते प्रायशो नाभिजातः
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः॥

अर्थात : यदि सेवा करने वाला चुप रहता है तो लोग उसे मूक (गूंगा) कहते हैं। यदि बोलने में चतुर होता है तो लोग उसे बकवादी कहते हैं। यदि सेवक वृद्ध, बीमार या गुरु इत्यादि के समीप बैठा रहता है तो उसे अशिक्षित एवं निर्लज्ज कहा जाता है तथा दूर रहने पर मूर्खादि। यदि सेवक में बातें सहन करने की क्षमता है तो उसे कायर या बुझदिल समझा जाता है, नहीं सहने पर अकुलीन। अतः सेवा धर्म अतिशय क्लिष्ठ है जो योगियों तक को परिज्ञात नहीं है।

गुरु महाराज ने स्वगुरुदेव की ही नहीं अन्य श्रमणों की भी सेवा की है। यथा – पुप्फभिक्खु श्री फूलचन्द्रजी महाराज की, सदर बाजार में स्थानकपति श्री रामचन्द्रजी महाराज।

यह मेरे वैराग्य जीवन की घटना है कि जिस समय सदर बाजार में श्री रामचन्द्र जी महाराज अन्तिम श्वासें ले रहे थे। उन्हीं दिनों मेरे आराध्य गुरुदेव शान ए जिन शासन, उपप्रवर्तक श्री प्रेमसुखजी महाराज दिल्ली लक्ष्मीनगर जैन स्थानक में विराजमान थे– प्रातः लाला आत्माराम एवं अनय श्रावक विनती करने के लिए पहुँचे तो ज्ञात होते ही गुरु महाराज ने कहा – इसमें विनती करने जैसी क्या बात है? अगर एक सन्त की सेवा सन्त ही नहीं करेगा तो और कौन करेगा? इतना सुनकर श्रावकी के नेत्र सजल हो गए तथा गुरुदेव को धन्य-धन्य कह उठे।

तदनन्तर तत्काल गुरु महाराज ने वहाँ से विहार किया और सदर स्थानक में पहुँचे। उस समय श्री रामरूप जैन, श्री ओम प्रकाश जैन, श्री पन्नालाल जैन एवं श्री मित्र सैन, जैनादि महाराज श्री की सेवा में संलग्न थे – तभी गुरु महाराज ने उनको मंगल पाठ सुनाया और खुद सेवा करनी प्रारम्भ की।

श्री रामचन्द्र जी महाराज का शरीर पूरा होने पर, अगले दिन शोक सभा मे श्री रामरूप जैन ने कहा कि श्री प्रेमसुख जी महाराज ने श्री फूलचन्द्रजी महाराज की सेवा की तो समाज ने महाराज श्री को (परमसेवा भावी) की चद्दर करोलबाग में भेंट की गई सो हम उसी चद्दर पर महाराज श्री के सेवाभाव को देखकर सितारे लगाते हैं।

संयम के प्रति आस्था – श्री गुरुदेव शास्त्री नगर मे विराजमान थे। वहीं पर गुरुदेव का कुछ स्वास्थ्य ढीला हो गया था तथा साथ में एक फोड़ा भी। फोड़ा अपना भयंकर स्वरूप बनाता चला गया, फलस्वरूप करोल बाग

(पूसा रोड़) पर आप्रेशन करवाना पड़ा। चातुर्मास का समय नजदीक होने पर विहार करने की बात आई तो डाक्टर साहब ने चलने के लिए मना कर दिया – तथा वाहन के प्रयोग करने के लिए जोर दिया, करोल बाग के निवासी श्री पाल जैन एवं सदर बाजार की जैन समाज ने भी वाहन प्रयोग के लिए पूरा जोर दिया। किन्तु गुरु महाराज कहने लगे कि मैं जीतेजी अपनी होश में वाहन का प्रयोग नहीं करुँगा। अन्ततः पैदल चलकर चातुर्मास हेतु सदर पधारे।

तपाराधना – जब से श्री गुरुदेव ने प्रवज्या अंगीकार की है तभी से प्रतिवर्ष होली एवं दीपावली का निर्जल तेला करते आ रहे हैं। पिछले वर्ष 5 जनवरी 1988 को गुरु महाराज को दिल का दूसरा दौरा पड़ गया था, स्वास्थ्य को देखते हुए – शक्ति नगर एक्सटेंसन समाज की चातुर्मास की पुरजोर एवं भावभरी विनती को स्वीकार किया। प्रतिज्ञा अनुसार डाक्टर के मना करने पर भी गुरु महाराज ने दीपावली का तेला किया। श्री ओमप्रकाश जैन (मंत्री - सदर बाजार) ने डाक्टर जी.डी. गुप्ता को बुलवाकर गुरु महाराज की जाँच करवाई – तो श्री जी.डी. गुप्ता ने कानों पर हाथ लगाकर एवं दांतो तले जीभ दबाकर महाआश्चर्य प्रगट किया तथा कहा कि अनेक सन्त देखे किन्तु ऐसे योगी जो प्राणनाशक बीमारी में भी तीन-तीन दिन का फास्ट कर लेते है, पहली बार ही देखा, जिसे देखकर मेरी आत्मा प्रसन्न ही नहीं बल्कि नतमस्तक है। यह है गुरुदेव श्री जी की अटूट आत्मिक शक्ति।

दीनों के प्रति उमड़ती दया – अध्यात्म योगी गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी महाराज दया की प्रतिमूर्ति हैं। गरीबों, दीनों, अपाहिजों एवं अनाथों की जीवन रक्षा के लिए आप श्री ने अनेकों हॉसपिटल एवं डिस्पेंसरी खुलवाई हैं। यथा – बाल ब्रह्मचारी, प्रातः स्मरणीय श्री भागमल जी महाराज की जन्म भूमि पुरखास में, दिल्ली - शास्त्री पार्क, लक्ष्मी नगर गुड़गांव इत्यादि। इसी के साथ-साथ अनेकों धर्म स्थानकों का निर्माण भी करवाया। इस प्रकार गुरुमहाराज की समाज की अनेकों देन हैं जिनको कागज पर उद्धृत करना असम्भव है।

धरती का कोहिनूर

शान एक जिन शासन उपप्रवर्तक श्री प्रेमसुख जी म. के शिष्य – रमणीक मुनि "शास्त्री"

आत्मा में अनन्त पराक्रम का वास है। सज्जनों का पराक्रम किसी को जीवन देता है, तो दुर्जनों का प्राबल्य किसी का जीवन-दीप बुझा देता है। शक्ति का प्रयोग तो दोनों ही कर रहे हैं किन्तु किसी से जीवन की मुस्कान मिल रही है तो किसी से कसमसाती आह ! एक के कदम तो इन्सान से भगवान् की दिशा में बढ़ रहे हैं तो एक के पग इन्सान से भी गिरकर हैवान व शैतान की ओर अग्रसर हैं। कितनी विपरीतता !

हमारे इन्हीं कार्यकलापों से पता चलता है कि हम कौन हैं। हमारा जीवन, हृदय में उठने वाली तरग का क्या प्रयोग चल रहा है? यही तो हमें दो भागों में विभाजित करता है।

जब हम इन हाथों से निर्वसन को वसन देते हैं, खुशियों का खुला गगन देते हैं, बेसहारों के सहारे बनते हैं, प्रीति के फूले मनोहर गुब्बारे बनते हैं, पिपासु का पानी व भूखे की रोटी बनते हैं, रोगी की निरोगता बनते हैं व दुखियों की मुस्कान बनते हैं तो समझो हमारा जीवन सज्जनता की परिधि में जी रहा हैं। अब कोई बड़ा अन्तर नहीं रहा आपके तथा उस जागे परमात्मा के बीच। परमात्मा से पहले सज्जन होना अति अनिवार्य है। भगवत्ता सज्जनता पर आधारित है। सुन्दर आकृति में, सुन्दर देहयष्टि में ही भगवत्ता अवतरित हो यह जरूरी नहीं उसके लिए तो अहिंसा-करुणा दया व परोपकार के मृदुल जल से सिंचित-भूमि की जरूरत है सिद्धत्व का बीज ऐसी ही धरा पर अंकुरित होगा। यह मानव जीवन ही वह बीज है जिसमें भगवत्ता अंकुरित हो सकती है। जिसमें सिद्धत्व-बुद्धत्व की वास्तविक जीवन-सत्ता प्रगट हो सकती है। हाँ तो ! आइये। जरा एक महान् दार्शनिक की लेखनी से निर्झरित शब्दावली को निहारते हैं जिसमें करुणामय पुरुष के वास्तविक आभूषणों की चर्चा की है–

The ear of the benevobnt shince by listening to Vedic lore and not with an ear-ring his hand with charity and not with a bangle his body, with beneficence and not with snadal point.

– करुणामय पुरुषों के कान कुण्डलों से नहीं शास्त्र-श्रवण से शोभित होते हैं। ये कर-युगल (हाथ) कंक्डों से नहीं अपितु दान से विभूषित होते हैं और यह मानव-शरीर परोपकार से शोभता है न कि चन्दनादि लेपन से।

कितने मीठे शब्दों से प्रयुक्त है उपरोक्त पंक्तियां मानो इसी में ही मानव जीवन का सार समाहित हो गया है। इसी के साथ राजर्षि भर्तृहरि ने अपने नीति-शतक में इस मनुष्य को चार श्रेणी में विभक्त किया है। यथा --

एते सत्यपुरुषाः परार्थ घट काः, स्वार्थान् परित्यज्य ये।
सामान्यास्तु पदार्थमुद्यम भृतः, स्वार्थाविरोधेन ये।
ते मानुष राक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये।
ये तु ध्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहें॥

ओह ! कितना सत्य टपक रहा है। राजर्षि कहते हैं कि "पर-हित हेतु जो अपने हित का ख्याल नहीं करते ऐसे प्रकृतिस्थ व्यक्ति को उत्तम, जो अपने अर्थात् स्व-हित को बिना कुछ हानि पहुँचाए पर-हित में संयुक्त हैं वे मध्यम और और अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की खुशियों से खिलवाड़ करते हैं वे अधम – मानवाकृति में राक्षसी स्वभाव को लिए फिर रहे हैं। किन्तु जो निष्प्रयोजन ही दूसरों को उजाड़ रहे हैं उनको हम क्या कहें – नहीं जानते।

वास्तव में राजर्षि ने अपनी चन्द पंक्तियों में सत्य-सत्यता को भर दिया है।

यह पूर्णतया सत्य है कि जब उस खुदा का नूर इस आदम में भरता है तो यही आदम इस धरती का कोहिनूर बनता है।

हाँ ! तो मैं समाज के उस कोहिनूर की चर्चा करना चाहता हूँ जिसने स्वयं को ही नहीं वरन् अपने प्रकाश से दूसरों को भी प्रकाशित किया है। अनेक गमगीन को नई बहार बख्शी, निराशा में आशा की मशाल थमाई। ऐसे हैं मेरे अनन्त उपकारी पूज्य गुरुदेव परम सेवाभावी उपप्रवर्तक श्री प्रेम सुखजी महाराज।

इस समय मैं एक शिष्यभाव से नहीं अपितु गुणानुराग से प्रेरित हो लिख रहा हूँ। जिसमें कुछ सत्यता की सुगन्ध है वह पुष्प दे रहा हूँ।

गुरुजी का हमेशा एक लक्ष्य रहा है कि मेरे जीवन से किसी निराश को मुस्कान मिले कसमसाती आह नहीं। आंखों से गिरते आंसु भी मोती बन जाएं इसके अलावा कुछ चाह नहीं। मेरे गुरु ने जो सन्देश दिया था कि "प्रेम। अपने जीवन में अन्धकार नहीं प्रकाश करना सीखना। दुर्लंध्य स्थिति में भी निराश नहीं आश करना सीखना।"

महापुरुष का शिष्य भी जिसके सान्निध्य में वह संस्कारित हुआ है। वह परोपकारादि महानता के पथ पर ही चलेगा किसी गौरवहीनता के पथ पर नहीं। इस बात को तो सारा संसार भी स्वीकार करता है।

गुरु महाराज ने जो स्थान-स्थान पर जन-सेवा के मन्दिर (औषधालय-अस्पताल आदि) खुलवाये हैं ये उनके परोपकार की भावना के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

सुख हमेशा धर्म से झरता है। अतः गुरु महाराज हर जगह धर्म-स्थान त्याग-तप की प्रेरणा देते हैं।

उनकी धर्ममयी प्रेरणा का फल है कि हमारे इस सन्त समुदाय में दो उत्साही मुनिराज तप-पगडण्डी पर बढ़ दे रहे हैं। ये उत्साही मुनिराज हैं— श्री कौशल मुनि जी म० और श्री सतेन्द्र मुनि जी म० जो वर्षी-तप की आराधना में संलग्न हैं।

श्री सतेन्द्र मुनि जी म० जो हमारे गुरुदेव के पौत्र-शिष्य तथा मधुर वक्ता भाग्य-कुल-भूषण मेरे ज्येष्ठ व श्रेष्ठ गुरु भ्राता श्री रवीन्द्र मुनि जी म० शास्त्री के शिष्य रत्न हैं। जो दो साल पूर्व इन्द्रपुरी (नारायणा) दिल्ली में भौतिक परिवेश को त्याग आध्यात्मिक्-परिवेश में प्रवेश किया था और तभी से ही वर्षी-तप की आराधना में संलग्न हैं और आज उनका वर्षी-तप पूर्ण होने जा रहा है। अतः इस वीर-सपूत को, पूज्य गुरुदेव को, अपने ज्येष्ठ भ्राताजी को बधाइयाँ देता हूँ कि जिनके सत्प्रयासों से तप की फसल लहलहा रही है। ये तप-महल अनगोल व मनोहर मणियों से जगमगा रहा है। जगमगाता रहे यही कामना करता हूँ।

पूज्य गुरुदेव का यह विमल-यश दिन प्रतिदिन वृद्धिंगत हो। इसी शुभकामना के साथ –

शासनपति भगवान् महावीर स्वामी की सदा जय विजय हो।
मेरे पूज्य गुरुदेव की सदाकाल जय विजय हो।।

परोपकार

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्था संभवामि युगे-युगे ॥

सज्जन पुरुष, महात्मा लोग तब-तब अवतरित होते हैं जब-जब धर्म की हानि तथा अधर्म की वृद्धि होती है, उनका प्रयोजन होता है कि पृथ्वी पर सज्जनों की रक्षा हो, दुष्टों का नाश हो और धर्म की संस्थापना हो। उपर्युक्त स्थिति के दृष्टि गोचर ही बाल ब्रह्मचारी स्व० श्री भागमल जी महाराज का आविर्भाव हुआ, जो सर्वविध हिंसा वर्जित सर्व प्राणिमात्र दया रक्षित जैन धर्म में दीक्षित होकर सार्वभौमिक सार्वजनिक सर्वविश्व प्राणिमात्र के कल्याण का चिन्तन, मनन एवं निदिध्यासन किया। ऐसे महापुरुषों का यज्ञ ही शरीर होता है जो जरामरण वर्जित होता है। परोपकार ही प्राण होता है जो प्रति प्राणी का अपने श्वास-प्रश्वास तक परोपकार करते हैं। धर्म ही उनकी आत्मा होती है, तप ही उनका कर्म क्षेत्र होता है सत्य वचन ही उनकी धर्म-ध्वजा होती है। धर्मोन्मुख सद्कर्म - परायण सन्मार्ग पर जनता को लाना ही मूल स्वार्थ होता है। ऐसी महान् विभूतियों का अवतरण प्रकृति से सदा सान्निध्य एवं सामीप्य होता है तथा वे सज्जन पुरुष प्रकृति से ऊपर उठकर मानव मात्र का कल्याण करते हैं।

वे परोपकार की शिक्षा प्रकृति कृत कार्य से ग्रहण करते व कराते हैं। जैसे वृक्षों के फल सदा दूसरों की अमृतरस क्षुधा पिपासा पीड़ा को नाश करके नया जीवन देते हैं। उनके पुष्प सुगन्धि देकर पर्यावरण वायु प्रदूषण को रोकते हैं, उनकी छाया आतप से पीड़ित राहगीरों, पशु-पक्षियों को आश्रय देती है। उनकी टहनियों पर हजारों पक्षी, जीव-जन्तु अपना घर बनाते हैं। उनके पत्ते आक्सीजन तथा खाद के काम आते हैं। उसकी शाखाएँ गृह निर्माण में कड़ी, किवाड़ों के काम आती हैं, उस वृक्ष की अवशिष्ट टहनियाँ घरों में अग्नि के द्वारा अन्न पकाकर लोगों के उदरपूर्ति में सहायक होती हैं। इस प्रकार वृक्ष का सारा जीवन शरीर आत्मादि सब कुछ दूसरों के लिए होता है। यही परोपकारी जीव का लक्षण है।

इसी प्रकार सूर्य का तपना भी परोपकार मय है वह स्वयं तपता है लोगों को प्रकाश, ऊर्जा, उष्मा, रोशनी देता है। वृक्षों पशु-पक्षियों को आहार प्रदान करता है। चन्द्र की चन्द्रिका, नदियों का जल, मेघों का बरसता पानी, ये सब कुछ मानव को परोपकार की प्रेरणा का ही तो स्रोत हैं। गाय भी एक ऐसा पशु है जिसका सब कुछ परोपकारमय है। गाय के दूध, दही, मक्खन, लस्सी, घृतादि से हमें आनन्द मिलता है। उसका गोबर हमें खाद एवं कीट नाशक धूम देता है। गाय का बच्चा बैल बनकर कृषि कार्य में काम आता है। मर कर भी गाय हमें अनेक प्रकार के लाभ प्रदान करती है। इस प्रकार संसार में वायु का बहना, लताओं का फलना-फूलना, पृथ्वी का अन्न देना ये सब परोपकार ही तो है। इसी प्रकार गुरू का उपदेश भी मानव के अज्ञान का नाश करके ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। अन्धकार में भटके हुए मानव को राह दिखलाता है। अपने भक्तजनों के पैसे से दो- दो काम करवाता है। अपने भक्तों के पापों को धुलवाता है, पुण्य का सृजन करवाता है। उस पैसे से गरीब बीमार, पीड़ित, दुःखित लोगों के दुःख दूर करने हेतु चिकित्सालय, भोजनालय, विद्यालय आदि बनवाता है।

यदि परोपकार का चिन्तन करें तो हम पायेंगे (पर + उपकार) दूसरों का भला। परन्तु इससे भी गहरा अर्थ यह है कि पर = शत्रुओं का भी उपकार = भला, जो करे, वह मनुष्य परोपकारी है। जैसे वृक्ष को कोई

पत्थर मारे तो वह वृक्ष उसे फल-फूल और छाया ही देता है। यह परोपकार का सच्चा अर्थ है। हमारे शास्त्र कहते हैं कि हाथ की शोभा कंगण से नहीं अपितु दान से होती है, कान की शोभा कुण्डल से नहीं, शास्त्रश्रवण से होती है। इसी प्रकार महात्मा पुरुषों की शोभा परोपकार से होती है न कि चन्दन गन्धादि के लेपन से। महात्मा पुरुषों का परोपकार ही धन, पुण्य, धर्म, तप, कर्म एवं जीवन होता है। इसीलिए तो नीति शास्त्र कहता है कि इस परिवर्तनमय संसार में कौन जन्मता या मरता नहीं, परन्तु वास्तविक जन्म-मरण उसी पुरुष का सार्थक है जो दूसरों के लिए जन्मता या मरता है। जैसे – भगवान महावीर, महात्मा बुद्ध, राम, कृष्ण, स्वामी राम कृष्ण परमहंस आदि।

परोपकार के विषय में एक कथा आती है कि एक सन्त नदी में स्नान कर रहे थे। नदी में बहते हुए उन्होंने एक बिच्छू को देखा, सन्त ने दयार्द्र होकर उस बिच्छू को बाहर निकालने का प्रयास किया तो उस बिच्छू ने उसे काटा और फिर सन्त की हस्त पीड़ा के कम्पन से जल में पुनः बह गया। सन्त ने पुनः उसे बाहर निकालने का प्रयास किया, परन्तु बिच्छू ने पुनः अपनी धृष्टता प्रदर्शित की इस प्रकार बार-२ सन्त ने बचाया, बिच्छू ने बार-बार सन्त को काटा। परन्तु एक प्रत्यक्षदर्शी ने सन्त को कहा कि महाराज ये दुष्ट आपको काट रहा है परन्तु आप इसे बचा रहे हैं, इसे मार क्यों नहीं देते। सन्त ने हँसते हुए कहा जब यह बिच्छू अपने दंशन धर्म का परित्याग नहीं करता, मैं अपने परोपकार भाव कैसे छोड़ दूँ। अर्थात् यह अपने धर्म का पालन कर रहा है, मैं अपने धर्म का पालन कर रहा हूँ। धन्य ऐसे ऋषि, मुनि, सन्त, महात्मा जो परोपकार की खुराक से फलते-फूलते तथा बढ़ते हैं तथा मरणोपरान्त भी अपनी देह को नदी में विसर्जन की इच्छा प्रकट करते हैं, ताकि उस शरीर से हजारों जल-जीव-जन्तुओं का भला हो सके। अतः परोपकार वह अमूल्य निधि है जो मनुष्य को यश, कीर्ति, शान्ति, मुक्ति, पुण्य तथा सर्वविध ऐश्वर्य प्रदान करता है। अतः हमें बाल ब्रह्मचारी स्व० श्री श्री १००८ श्री भागमल जी महाराज के जीवन से परोपकार की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

आचार्य हरिकृष्ण शर्मा

सेवा-जीवन की मंगलमय साधना

उपाध्याय विशाल मुनि (तमिलनाडू)

जैन मुनि स्व० श्री भागमल जी म. सा.

धर्मार्थ औषधालय शास्त्री पार्क" संस्था की दसवीं वर्षगाँठ की शुभ सूचना परमस्नेही ओजस्वी प्रवक्ता श्री रविन्द्र मुनि जी म. सा. से पाकर हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हुई। संपूर्ण रूप से सेवा में समर्पित आदर्शभूत ऐसी सेवा संस्थाओं की जानकारी समय-समय पर संपूर्ण देश की जनता को प्राप्त हो यह बहुत आवश्यक है। इससे अनेकानेक लोगों तथा संस्थाओं के मन में जन सेवा की पुनीत प्रेरणा मिलती है।

परम सेवाभावी धर्म प्रभावक पूज्य श्री प्रेमसुख जी म. सा. की प्रेरणा से संचालित प्रस्तुत हस्पताल विगत १० वर्षो में भरपूर सेवा का लाभ ले चुका है। कितने ही बार दिल्ली शास्त्री पार्क में जाने का तथा संस्था के सेवा कार्यो को प्रत्यक्ष में देखने का अवसर प्राप्त हुआ। देखकर मन में बड़ी प्रसन्नता हुई। यह संस्था प्रति दिन सैंकड़ों परिवारों को औषधि-दान द्वारा प्रसन्नता का उपहार बाँटती रहती है जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है।

प्रस्तुत धर्मार्थ सेवा संस्थान में एक्सरे विभाग, परीक्षण विभाग, आप्रेशन विभाग विशेष रूप से कार्यरत है। हृदय रोग, नेत्र रोग, पोलियो, ई० एन० टी० के विशेष ड्राक्टर यहाँ पर कार्यरत है और हजारों इन रोगों से प्रताडित रोगी यहाँ पर आकर आनन्दानुभूति रोग मुक्ति प्राप्त कर नयी चेतना के साथ नया जीवन प्रारंभ करते हैं।

मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है असहाय रोगी मनुष्यों की सेवा करना। सेवा धर्म सबसे बड़ा धर्म है। श्रमण भगवान महावीर स्वामी जी ने सेवा को परम तप कहा है। सेवा करने वाला जन्मों जन्मों के कर्मों

को खपा कर के मानव से महामानव बनने की ताकत प्राप्त कर सकता है। महात्मा ईशु ने सेवा का महत्व जन जन को सिखाया उन्होंने यही उद्घोषणा की असहाय से असहाय अनाथ मानव की सेवा ही भगवान की पूजा है यही प्रार्थना है यही भक्ति है यही वास्तव में धर्म की आराधना है।

कहा भी है — सेवा धर्मः परम गहनो योगिनामप्यगम्यः सेवा धर्म परम गहन है कठिन है अनेकानेक अड़चनों से परिषहों से भरा हुआ है। अन्य बड़ी बड़ी तपस्यायें हो सकती हैं पर सेवा रूप तपस्या की आराधना करना आसान नहीं है यह गहन है परम गहन है। बड़े बड़े योगी तपस्वी संयमी भी सेवा के कार्य में समर्पित नहीं हो सकते हैं। पूज्य श्री भागमल जी म. सां. की महा महिमावन्त जीवन को ज्योतित बनाये रखने के लिए उनके नाम पर सेवा संस्था की स्थापना करने की प्रेरणा श्री प्रेमसुख जी मा. सा. ने शास्त्री पार्क निवासियों को दी। इन सुश्रावकों ने आपकी प्रेरणा पाकर के कुछ न कुछ करने की भावना बनाली तथा धर्मार्थ औषधालय का निर्माण कर उसका सफलता पूर्वक संचालन करने का प्रण लिया उसी का परिणाम यह है कि आज दिल्ली की बड़ी बड़ी सेवा संस्थाओं में इसका नाम आने लगा है। धर्मार्थ औषधालय समिति के सभी के सभी पदाधिकारीगण एवं सभी सदस्य हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं। इन अधिकारियों की तन्मयता लगन सेवा कार्य के प्रति सद्भावना यह सब प्रशंसनीय तथ्य हैं। सभी को हार्दिक धन्यवाद है।

यह सेवा संस्थान सर्वथा सफलता पूर्वक आगे अग्रसर हो। यह हजारों निराश परिवारों को लिए आशा का केन्द्रस्थल बने। इस संस्था की उत्तरोत्तर उन्नति समुन्नति होती रहे ऐसी हार्दिक मंगल कामनायें हैं।

संसार में सेवा का कोई मूल्य नहीं आँका जा सकता सेवा प्रवृत्तियों की प्रशंसा शब्दों से नहीं की जा सकती है। सेवकों तथा सेवा संस्थाओं की महानता को हम शब्दों में बाँधना चाहें यह असंभव है सेवा करने से कैसी आनन्दानुभूति होती है यह सेवा करके ही अनुभव में लाया जा सकता है। उसे कहा नहीं जा सकता अतः सभी संस्था से सम्बन्धित महानुभावों को हृदय से मंगल कामनायें हैं।

परोपकाराय सतां विभूतयः

लेखक : शान ए जिनशासन उपप्रवर्तक परम सेवाभावी श्री प्रेमसुखजी महाराज के शिष्यानुशिष्य मुनि राजेश "प्रभाकर"

संसार में अनेक प्रकार के आभूषण विद्यमान हैं। जिन आभूषणों से आज का मानव अपने-आप को आभूषित करना चाहता है, सजाना चाहता है, विभूषित करना चाहता है, मंडित करना चाहता है और उन – बाह्य आभूषणों से सुशोभित होकर अपने-आप को धन्य समझता है। वह जीवन को भौतिकवाद में यापन करना और साज-सज्जा को ही सर्वस्व समझकर आज की रंगीन दुनिया में मशगुल हो जाता है।

क्षणिक एवं भौतिक आभूषणों, वेषभूषाओं एवं सजावट-बनावट को ही मानवीय गुण मानकर चलता है किन्तु यह सब मिथ्या, विश्वास और झूठी आस्था है, व्यक्ति का भ्रम है। मानवीय गुण और मानव का कोई सच्चा आभूषण है तो वह है केवल परोपकार। परोपकार जीवन का सच्चा, सम्यक् एवं सुन्दर आभूषण है। जो व्यक्ति भौतिक आभूषणों से सज्जित होता है उस को पग-पग पर खतरा बना रहता है। वह एकाकी किसी भयानक वन में गमन कर नहीं सकता क्योंकि चोरों, डाकुओं और लुटेरों से उसको भय बना रहता है कि कहीं वे मुझे लूट ना लें, खसोट न लें आदि-आदि। किन्तु जो परोपकारी रूपी आभूषणों से भूषित होता है वह सर्वत्र निर्भय एवं प्रसन्नचित होकर विचरण कर सकता है। उसे किसी भी प्रकार का कोई खतरा नहीं होता। विद्वानों ने परोपकार की परिभाषा करते हुए कहा है –

"परेषाम् उपकारः परोपकारो विद्यतो।" अर्थात् दूसरों का उपकार परोपकार कहलाता है। जो इस तन को पाकर दूसरों को जीवन देता है। उजड़े हुए को बसाता है, रोते हुए को हँसाता है, गिरते हुए को उठाता है, उसका जीवन ही वास्तविक जीवन होता है। कहा है – "परोपकाराय भवन्ति सतां विभूतयः।" अर्थात् महान पुरुषों का सर्वस्व परोपकार के लिए होता है। एक संस्कृत के कवि ने कहा है कि

क्षोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन - दानेन पाणिर्नतु कक्ंडणेन।
विभातिकायः खलु सज्जनानां परोपकारेण न चंदनेन॥

अर्धात् सज्जनों के कर्ण कुण्डल से नहीं बल्कि शास्त्रो के श्रवण से सुशोभित होते हैं, हस्त कंगन धारण करने से नहीं बल्कि दान प्रदान करने से शोभित होते हैं। इसी प्रकार सज्जनों का शरीर चन्दनादि का विलेपन

करने से नहीं बल्कि परोपकार से शोभित होता है। पुनः कहा है कि –

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्याः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥

इस श्लोक का यही भावार्थ है कि समग्र वृक्ष परोपकार के लिए फलित होते हैं। समस्त नदियाँ निर्झरादि परोपकार के लिए प्रवाहित होते हैं। परोपकार के लिए ही गोमाता दुग्ध प्रदान करती है और अन्त में कहा है यह मानव का शरीर ही परोपकार के लिए होता है। उक्त प्रसंगानुकुल घटित होता है परम – सेवाभावी, उपप्रवर्तक परम पूज्य पितामह गुरुदेव श्री प्रेम सुख जी महाराज का जीवन। गुरुदेव का समग्र जीवन ही परोपकारमय है। गुरुदेव का प्रत्येक कार्य सदैव परोपकार के लिए होता है। परोपकार की भावना, सेवा की भावना, सरलता, सज्जनता, सच्चरित्रता, सौम्यमुखाकृतिना, सहनशीलता आदि अनेकों गुण मानो परमाराध्य गुरुदेव के परोपकारमय जीवन को सुशोभित एवं विभूषित कर देते हैं। गुरुदेव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व किसी से छिपा नहीं हैं। दिल्ली जैसे नगरों में विराजकर जो कार्य गुरुदेव ने समाजहित, परहित, परसेवा एवं परकल्याण के लिए व परोपकार के लिए किये हैं वे किसी से छिपे नहीं है। वर्तमान काल में श्री परमवन्दनीय जीवनदाता प्रदाता पूज्यगुरुदेव श्री प्रेमसुख जी म० अनेक प्रशंसनीय एवं सराहनीय कार्य में तल्लीन है।

एक घटना जो कि स्वयं मेरे जीवन से संबंधित है। उसका वर्णन अवश्य करना चाहता हूँ। दीक्षा से पूर्व मुझे डरावने बुरे स्वप्न दिखाई दिया करते थे। एक दिन मैंने अपनी समस्या गुरुदेव के समक्ष रखी। गुरुदेव ने मुझ पर कृपा करी और मुझे एक जाप बताया। जिस के जपने से मेरी परेशानी दूर हो गई। ऐसी अनेक घटनाएँ हैं जिन्हें कभी विस्तार पूर्वक प्रगट किया जाएगा।

अनमोल मोती

संकलन कर्त्ता - कु० अमिता जैन (शास्त्री पार्क)

1. जिओ और जीने दो - भगवान महावीर
2. सुंदर वही है जिसकी कृतियाँ सुंदर हैं – फील्डिंग
3. अकर्मण्यता ही मृत्यु है – मुसोलिनी
4. आत्मविश्वास सरीखा दूसरा मित्र नहीं, आत्म-विश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढ़ी है
   – स्वामी विवेकानन्द
5. आशा अमर है उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती – महात्मा गांधी
6. मित्र पाने का मार्ग है, स्वयं किसी का बन जाना - Amerson
7. मित्रता करने में शीघ्रता मत करो, परंतु करो तो अंत तक निभाओ – सुकरात
8. मन, वाणी और शरीर से सम्पूर्ण संयम में रहने का नाम ही ब्रह्मचर्य है – भगवान महावीर
9. दीक्षा का अर्थ समर्पण है, आत्म समर्पण बाहरी आडम्बर से नहीं होता, यह मानसिक वस्तु है
   – महात्मा गांधी
10. अपने ऊपर विजय प्राप्त करना ही सबसे बड़ी विजय है - Plato
11. असन्तोष पराजय का दूसरा नाम है – मुसोलिनी
12. जो गुणी होते हैं, वे अपनी जिम्मेदारी की बात सोचते हैं; जो गुणहीन होते हैं वे अपने अधिकार का नाम रटा करते हैं – टैगोर
13. गलती करना मनुष्य का स्वभाव है, पर गलती को स्वीकार करना सच्चे मनुष्य का कर्त्तव्य है
   – महात्मा गांधी
14. प्रेम बसन्त समीर है, द्वेष ग्रीष्म की लू – प्रेमचंद
15. जीवन एक प्रश्न है और मृत्यु उसका अटल उत्तर – जयशंकर प्रसाद
16. प्रत्येक व्यक्ति अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। स्वर्ग और नरक मनुष्य की अपनी ही प्रवृत्तियों का परिणाम है। मनुष्य स्वयं अपना शत्रु है और स्वयं मित्र। – भगवान महावीर

बीजांकुर से वृक्ष तक

(जैन मुनि श्री भागमल जी महाराज हस्पताल की कहानी)

मंत्री धर्मचन्द जैन

वर्ष 1978 का दिसम्बर मास। प्रथम बार उपप्रवर्तक परम सेवा भावी गुरुदेव श्री प्रेम सुख जी म० अपने शिष्यों सहित यमुना नदी के निकट स्थित छोटी सी कालोनी शास्त्री पार्क के लघु जैन स्थानक में पधारे। कालोनी का पूरा विकास नहीं हुआ था। कालोनी की जगह अगर लघु गाँव कहूँ तो ज्यादा उचित होगा। स्थानकवासी घर 10-15 ही थे। रात्रि में गुरुदेव के दर्शनों हेतु सभी भाई पहुँचे। हमारे व्योवृद्ध सुश्रावक श्री रोशन लाल जी ने कहा – "गुरुदेव हमारा अहोभाग्य है कि आप इस उपेक्षित लघु बस्ती में पधारे हम आपके अति आभारी हैं। आप ऐसी कृपा करें कि हमारे स्थानक में एक छोटा सा औषधालय प्रारम्भ हो जो निर्धन व गरीब जनता की सेवा कर सके।" गुरुदेव ने सभी भाइयों से कहा – "सन्तों का आशीर्वाद परोपकार एवं सेवा के कार्यों के लिए हमेशा होता है। आप औषधालय की रूप रेखा तैयार करें हमारा जो भी सहयोग होगा हम अवश्य करेंगे।

अगले दिन सभी भाई पुन: गुरुदेव के पास पहुँचे और अपनी भावना प्रकट करते हुए कहा – हम यहाँ खुलने वाले औषधालय का नाम बालब्रह्मचारी स्थविर पद विभूषित स्व० श्री भागमल जी म० के पवित्र नाम पर रखना चाहते हैं और इस औषधालय के प्रेरक आप ही होगें। ऐसा सभी भाइयों का विचार है। अत: योजना स्वीकृत हो गई।

25 नवम्बर 1979 का शुभ दिन शास्त्री पार्क के लिए वरदान बन कर आया। इस दिन एक समारोह किया गया और श्री दया चन्द जी जैन (दौघट वालों) के कर कमलों द्वारा जैन स्थानक, शास्त्री पार्क के दो कमरों में एक औषधालय का उद्‌घाटन हुआ। ज्यों-ज्यों औषधालय की ख्याति बढ़ती गई, रोगियों की संख्या भी दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। इस औषधालय को गति प्रदान करने में कुशल चिकित्सक, मृदुभाषी डा० आर० एल० हांडा M.B.B.S. का भी विशेष उल्लेखनीय सहयोग रहा है। सेवा का पवित्र यज्ञ चल रहा था। स्वयं गुरुदेव तथा हस्पताल समिति का विचार था कि इस बीज को बरगद का रूप प्रदान करना है। औषधालय के लिए जगह कम पड़ रही थी। किसी उपयुक्त स्थान की तलाश थी। भावना फलीभूत हुई स्थानक के सामने 400 गज का भूखण्ड खाली और बिकाऊ था। हस्पताल समिति ने अविलम्ब इस भूखण्ड को खरीद लिया और 72 घण्टे का इस भूमि पर नवकार मंत्र का अखण्ड जाप बैठाया गया। हस्पताल का द्वितीय चरण था हस्पताल का अपना निजी भवन होना। वह दिन भी शीघ्र निकट आ गया। जब 30 नवम्बर 1980 को शास्त्री पार्क में एक विशाल समारोह हुआ और हस्पताल भवन का शिलान्यास दानवीर सेठ श्री राम दयाल जी जैन (बरेली वालों)के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

दो वर्ष की अवधि में हस्पताल की भूतल मंजिल का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया। 21.8.83 को भूतल मंजिल का उद्‌घाटन व्योवृद्ध श्राविका श्रीमति अंगूरी देवी जैन माता श्री वीर सैन जैन (इण्डिया फाइल) के द्वारा संपन्न हुआ। जैन स्थानक के दो कमरों में चलने वाले औषधालय का स्थानान्तरण हस्पताल भवन में हो गया और कार्य प्रारम्भ हो गया। भवन उद्‌घाटन के साथ ही परीक्षण विभाग (लैवोरेट्री) का श्री चमनलाल जी जैन (तिमारपुर) तथा एक्सरे विभाग का श्रमणोपासिका वहन श्रीमति सुदर्शना जैन धर्मपत्नी श्री सुकमाल चन्द जैन के द्वारा उद्‌घाटन सम्पन्न हुआ।

अब अस्पताल भवन में एक्सरा विभाग, आप्रेशन कक्ष, परीक्षण विभाग (लैबोरेट्री) कार्यरत है। अनेक योग्य डाक्टर जिनमें हृदय रोग विशेषज्ञ, नेत्र रोग विशेषज्ञ, बाल रोग विशेषज्ञ, चर्म रोग विशेषज्ञ आदि की सेवाएँ उपलब्ध हैं।

हस्पताल का और विस्तार किया जाए इस का विचार काफी समय से किया जा रहा था। अन्ततः 22 मई 1988 को गुरु-भक्त दानवीर सेठ श्री सत्य भूषण जैन सुपुत्र श्री रामनारायण जैन के कर कमलों द्वारा प्रथम तल का शिलान्यास संपन्न हुआ। अब हस्पताल का ढाई मंजिला अपना निजी भवन है।

हस्पताल भवन के निर्माण में श्री रामदयाल जैन, स्व० श्री चमन लाल जैन (तिमार पुर) श्री वीर सैन जैन (इण्डिया फाईल) श्री वीर सैन जैन (तीतर वाड़ा) श्री सत्य भूषण जैन, श्री रामेश्वर दयाल जैन (विवेक विहार) आदि का विशेष उल्लेखनीय सहयोग रहा है।

आज तक जो भी हम कार्य कर पाए हैं वह परम सेवा भावी उपप्रवर्तक गुरुदेव श्री प्रेम सुख जी म० की प्रेरणा, कृपा एवं आर्शीर्वाद का फल है। जिन दानवीरों ने दान, कार्यकत्ताओं ने कार्य द्वारा हमारा सहयोग किया है तथा जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में हमारा सहयोग किया है हम उनके हृदय से आभारी हैं। तथा भविष्य में सहयोग की अपेक्षा रखते हैं। निकट भविष्य में हस्पताल के द्वितीय तल का शीघ्र उद्घाटन हो यह हमारी हार्दिक अभिलाषा है

प्रेरणा स्रोत : उपप्रवर्तक श्री प्रेम सुख जी महाराज

पवन कुमार जैन (कोषाध्यक्ष, हस्पताल समिति)

पूज्य गुरूदेव, सर्व सेवा हृदयी, उपप्रवर्तक, परम सेवाभावी श्री प्रेम सुख जी महाराज के पावन चरणों में सादर समर्पित !

प्रातः स्मरणीय पूज्य गुरूदेव !

अति विशिष्ट सेवा द्वारा जिस प्रकार आपने 'परम सेवाभावी' विशेषण अर्जित किया, उसी प्रकार आप अपने अनुयायियों को भी सेवा मार्ग पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करते हैं। आज भी मुझे याद है जब आपने अपने पावन चरणों से शास्त्री पार्क को पावन किया था और यहाँ की निम्न मध्यम वर्गीय जनता को समुचित व सामयिक उपचार के अभाव में त्रस्त दखकर द्रवित होकर, हमारे पूज्य सुश्रावक श्री रोशन लाल जी जैन के समक्ष यहाँ एक औषधालय खुलवाने का प्रस्ताव रक्खा। आपकी ही सत्प्रेरणा निर्देशन और आशीर्वाद से आज "जैन मुनि १००८ स्व० श्री भागमल जी महाराज धर्मार्थ औषधालय" इस क्षेत्र के निर्धन समुदाय को विभिन्न सेवाएँ प्रदान कर रहा है।

अभावग्रस्त, दलित और पीड़ित व्यक्ति के लिए आपके हृदय में अथाह दया का सागर हिलोरें मार रहा है। जब भी कोई दु:खी व्यक्ति आपके पास आकर अपनी करूण गाथा सुनाता है, आप उसे स्नेह पूर्वक सन्मार्ग पर लगा देते हैं। जिससे.उसके न केवल इस भव के दु:ख दूर हो जाए, अपितु परभव के लिए भी वह ऐसी पुण्य पूँजी संचित करले कि फिर उसे कभी भटकना न पड़े। यही कारण है कि आज के इस भौतिकवादी और विभिन्न संप्रदायों में विभक्त समाज में भी आपके अनुयायी हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, जैन और अजैन सभी संप्रदायों में हैं।

हे पतितोद्धारक !

आपकी वाणी अत्यन्त मधुर व सरल है। आपकी शैली आधुनिकता से दूर होते हुए भी हृदय की गहराइयों में पहुँच जाती है, और श्रोता स्वयं आत्म चिन्तन करने पर विवश हो जाता है। यही कारण है कि जिस क्षेत्र में भी आपका पदार्पण होता है, वहीं धर्म प्रेमी बन्धु इसी प्रकार आकर्षित हो जाते हें जैसे चुम्बक लोह कणों कोअपनी ओर खींच लेता है। आपकी वाणी का अमृत वर्षण जिस क्षेत्र में होता है, उसी क्षेत्र में धर्म प्रभावना पुष्पित, पल्लवित और फलित हो जाती है और हजारों आत्माएँ धर्म आचरण अपना कर अपना, अपने स्वजनों और परिजनों का कल्याण करती हैं।

हे तिरण तारण !

आज जब कि मानव धनोर्पार्जन के लिए उचित, अनुचित कल्पनीय और अकल्पनीय किसी भी प्रकार के साधन का प्रयोग करने में संकोच नहीं करता, आपके उपदेश, उसी मानव को त्याग मार्ग की ओर प्रेरित करते हैं। आप की ही प्रेरणा से आज अनेक व्यक्ति अपनी आय का एक अंश, औषधी दान में देकर लाखों व्यक्तियों को स्वस्थता प्रदान कर जिस पुण्य का संचय कर रहे हैं वह निश्चित ही उन्हें इस भव और परभव में सुखी बनाएगा।

हे कृपा सिन्धु !

श्रमण संघ का यह असीम पुण्योदय है कि आप जैसे महान तपस्वियों का मार्गदर्शन और आशीर्वचन हमें प्राप्त होते रहते हैं। शासनदेव भगवान महावीर स्वामी से मेरी प्रार्थना है कि हमें यह मार्गदर्शन अनन्त

काल तक प्राप्त होता रहे जिससे श्रमण संघ की विभिन्न इकाइयाँ संगठित होकर और अधिक उत्साह से सेवा कार्यों में लगें, समाज में व्याप्त कुप्रथाओं को समाप्त कर मानव सेवा में रत हो जायें तथा भगवान महावीर स्वामी द्वारा आलोकित मार्ग का अनुसरण स्वयं करें तथा अन्यों से करवायें ताकि वैमनस्य, भौतिकवाद, ईर्ष्या तथा द्वेष के बोझ से कराहती यह मानवता, फिर से सुख की साँस ले सके।

स्व० श्री श्री १००८ श्री भागमल जी महाराज की याद में श्रद्धा सुमन

कौशल मुनि

तर्ज-तुम्हीं मेरे मन्दिर ....

कहाँ जा बसे हो, भागमल गुरूजी।
भंवर में है किश्ती, किनारे करो जी ।। ध्रुव ।।

१. कभी मैं गगन के, सितारों से पूछूं,
तुम्हें मैं तुम्हारे, सिंहासन पै ढूंढूं।
बीत गये वर्षों, अब दर्श दिखाओ ।। भंवर में है ......

२. मैं चरणों की धूलि को, अब कैसे पाऊं,
पापी है मन कैसे, मैं पावन बनाऊं।
दयालु दया की नज़र मुझ पे लाओ ।। भंवर में है ......

३. लगाया था पौधा, क्यों पानी न सींचा,
माली की याद में, दामन न भीजा।
ज्ञान का अमृत, हमें फिर पिलाओ ।। भंवर में है ......

४. नयन यह चढ़ाते हैं, श्रद्धा के मोती,
जगी आपके हृदय, में ज्ञान की ज्योति।
वही ज्योति हम सबके, मन में जगाओ ।। भंवर में है किश्ती ......

शाकाहार ही क्यों?

— **श्यामलाल जैन** एम.ए., साहित्य रत्न
(शास्त्री पार्क)

भोजन जीवन निर्वाह एवं शरीर संरक्षण के लिए अत्यन्त आवश्यक पदार्थ है। जब से जीवात्मा देह धारण करती है उसे भोजन या आहार की आवश्यकता होती है। भोजन के द्वारा ही शरीर का पोषण एवं संवर्द्धन होता है। लेकिन यह भोजन शाकाहारी भी हो सकता है और मांसाहारी भी। अब देखना है कि इन दोनों में कौन सा ग्राह्य है और कौनसा निषिद्ध।

यद्यपि मांसाहार धर्मशास्त्रों के अनुसार तो त्याज्य है ही किन्तु यह मानव प्रकृति के भी सर्वथा विरुद्ध है। मनुष्य प्रकृति (स्वभाव) से ही शाकाहारी है, मांसाहारी नहीं। मांसाहारी और शाकाहारी प्राणियों की शारीरिक रचना में भी बहुत अन्तर है। पुराणों में मनुष्य को बन्दर अथवा लंगूर का वंशज माना जाता है। बन्दर व लंगूर एक दम शाकाहारी प्राणी है जो जीवन पर्यन्त फल, फूल खाकर ही जीवन निर्वाह करते हैं। मनुष्य की आंतरिक व बाह्य बनावट बन्दर व लंगूर से मिलती जुलती है, अतः स्पष्ट है कि मनुष्य मांसाहारी प्राणी नहीं है, अपितु शाकाहारी है। मांसाहार की आदत तो उसे बाह्य विकृतियों से प्राप्त हुई है।

वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि मांसाहार जो कि मनुष्य के स्वभाव के विरूद्ध प्राप्य आहार है वह अनेक बीमारियों का खजाना है। मांसाहार से प्रायः कैंसर, क्षय, पायोरिया, गठिया, लकवा, पत्थरी, उन्माद व अनिद्रा जैसे भयंकर रोगों का आक्रमण होता है। **प्रोफैसर सर चार्ल्स बेल** ने लिखा है कि "अधिकांश दाँतों के रोग मांसाहार के कारण ही पाए गए हैं। आज अण्डा, मांस, मछली, आदि का विज्ञापन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है किन्तु इसके अन्दर पाए जाने वाले विषाणु तत्वों से शरीर रोगी व क्षीण हो जाता है"। प्रसिद्ध वैज्ञानिक **डाक्टर फोर्ड एम.डी.** कहते हैं कि — "मटर व चना आदि अन्नों में 23 से 30 प्रतिशत नाइट्रोजन तीन प्रतिशत तक नमक व 55 से 58 प्रतिशत तक खनिज व अन्य उपादेय तत्व पाए जाते है जबकि मांस में नाइट्रोजन केवल 8 से 9 प्रतिशत होता है और मिनिरल्स तो नाममात्र को ही पाए जाते हैं।" अतः वैज्ञानिक आधार पर भी स्पष्ट हो जाता है कि मांसाहार मनुष्य के लिए हानिप्रद है।

शाकाहार और मांसाहार का सामाजिक और धार्मिक आधार पर भी यदि तुलनात्मक विवेचन करें, तब भी शाकाहार का ही पलड़ा भारी पाया जाएगा। आर्य संस्कृति में जहाँ मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों के विकास पर अधिक बल दिया गया है, वहाँ मानवीय शारीरिक शक्ति के विकास को भी कम महत्वशाली नहीं बताया गया है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रह सकता है। आयुर्वेद शास्त्र का प्रणयन तो मात्र शारीरिक विकास की दृष्टि से ही हुआ है। उसमें शरीर की पुष्टि व वृद्धि के अनेक नियम बताए गए हैं। आयुर्वेद में रक्त, मज्जा, मेद, वीर्य आदि धातु विशेषों के वृद्धि कारक सरस पदार्थों को ही भोजन में स्थान दिया गया है जो अन्न, फल व शाक-सब्जियों से ही उपलब्ध कराए जा सकते हैं। मनीषियों ने स्वास्थ्य की दृष्टि से आहार के प्रमुख तीन भेद बताए हैं : **सात्विक, राजसिक व तामसिक।**

सात्विक भोजन वह भोजन होता है जो आयु, बल, आरोग्य, सुख-शांति, सत्व का पोषक हो। सरस एवं स्पृहणीय हो, स्थिर तथा ग्राह्य हो। वह केवल अन्न, फल, शाक-सब्जियों, रस व दूध में ही पाए जाते हैं।

दूसरे स्थान पर राजसिक आहार आता है, जो रजोगुणी बताया गया है। इसमें तीक्ष्ण, अम्लयुक्त, अधिक गर्म व तले हुए पदार्थ आते हैं जो धातु वैषम्य उत्पन्न करने वाले तथा आमाश्य को दूषित करने वाले बताए गए हैं।

तीसरे स्थान पर तामसिक आहार सर्वथा निकृष्ट जाति का माना गया है। यह रसहीन अधपका, दुर्गन्धयुक्त तथा अपवित्र होता है। इसमें मांस, मछली, अंडा व अन्य निकृष्ट श्रेणी के आहार आते हैं।

आर्यजनों ने केवल आस्वाद को ही ध्यान में रखकर भोजन को श्रेणीबद्ध नहीं किया अपितु उन्होंने भक्ष्याभक्ष्य का भी ध्यान रखा है। **प्रचिलत** लोक कहावत है कि – **"जैसा खाए अन्न वैसा होवे मन"**। अर्थात् जिस प्रकार का आहार सेवन किया जाएगा, मनुष्य का मन, वाणी और कर्म भी उसी प्रकार के होंगे। मांसाहार से मनुष्य का कोमल हृदय भी कठोर और निर्दयी बन जाता हैं। मांसाहारी की बुद्धि कुंठित हो जाती है और मस्तिष्क विवेकहीन बन जाता है। क्रोध, क्रूरता और भीरुता उसके सहचर बन जाते हैं, जबकि दूसरी ओर शाकाहारी सदैव दया, क्षमा, प्रेम, सहिष्णुता और संवेदनशीलता की ओर उन्मुख होता है।

धर्मग्रंथों में भी सभी जगह मांसाहार को निषिद्ध बताया गया है। जैन आगमों में नरकायु के चार कारण बताए गए है, जिनमें मांसाहार को स्पष्ट रूप से नरक का कारण बताया गया है। जैन धर्म की नींव तो अहिंसा पर ही टिकी है। वहाँ तो किसी का अनिष्ट-चिन्तन भी महापाप है, फिर जिह्वा तृप्ति के लिए मांसाहार तो घोर पाप है। बौद्ध धर्म भी मांसाहार को निषिद्ध मानता है। सिक्ख परम्परा में भी मांसभक्षण त्याज्य माना गया है। गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखा है :

जे रत्त लागे कापड़े, जामा होय पलीत।
ते रत्त पीवें मानुषा, तिन क्यों निर्मल चीत।।

पारसी परम्परा में भी मांसाहार को गलत बताया गया है। उनके एक धर्मग्रन्थ में लिखा है –

"He will not be acceptable to God, who shall thus kill any animal for taste".

मुस्लिम और ईसाई मत में भी मांसाहार की कड़े शब्दों में निन्दा की गई। गांधी और कबीर जैसे क्रांतिकारी समाज – सुधारकों ने भी मांसाहार को आड़े हाथों लिया है। कहना न होगा कि भारतीय धर्म परम्परा में ऐसा कोई भी मत या सम्प्रदाय नहीं है जिसमें मांसाहार का विरोध और शाकाहार का समर्थन न किया गया हो।

भौगोलिक दृष्टि से भी भारतभूमि मांसाहार के उपयुक्त नहीं है। अतः केवल शाकाहार ही इस देश के जीवन में प्राण फूँक सकता है और हमारी चिन्तनधारा को सरस बना सकता है। सरकारी और गैर सरकारी बहुत से प्रतिष्ठान आज इस बात के लिए प्रयत्नशील हैं कि भारतभूमि की प्राचीन और चिरन्तन शुद्ध-सात्विक परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए केवल शाकाहार पर ही बल दिया जाए।

केवल शाकाहार से ही हमारा मन और प्राण, हमारा चिन्तन और कर्म जीवन्त रह सकते हैं। केवल शाकाहार से ही हमारी आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति चिरन्तन और अमिट रह सकती है। केवल शाकाहार से ही हमारा भावात्मक और रागात्मक सम्बंध कायम रह सकता है। अतः मांसाहार को त्यागकर केवल शाकाहार के सहारे ही हमारे जीवन को महाकल्याण की ओर उन्मुख किया जा सकता है – इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

श्रद्धा के केन्द्र

उपेन्द्र मुनि

गुरुभागमल की पुण्य तिथि हम सब मिल आज मानते हैं।
सच्चे दिल से और श्रद्धा से चरणों में शीश झुकाते हैं॥

पूरी कोशिश रहे हमारी तेरा पथ अपनाने की,
तेरे ज्ञान की गंगा को इस जग में आज बहाने की,
तेरी कृपा से गुरुवर हम जो चाहते हैं सो पाते हैं॥१॥

बालब्रह्मचारी गुरुवर तुम घोर तपस्वी त्यागी थे,
दुखियों के तुम सच्चे साथी, जैन धर्म अनुरागी थे,
शिक्षाएँ आपकी पाकर हम सब, जीवन सफल बनाते है॥२॥

करें वन्दना आपके चरणों में यह जीवन सफल बनाने को,
याद सुबह और शाम करें "उपेन्द्र" मुनि तुझे पाने को।
तव गुण चिन्तन से गुरुवर मेरे कष्ट सभी मिट जाते हैं॥३॥

मानसिक शान्ति के लिये

पवन कुमार जैन
कोषाध्यक्ष
सी- 152 (शास्त्री पार्क)
दिल्ली- 53

भौतिक वादी युग, गलाकाट प्रतियोगिता, धनोपार्जन की लिप्सा, असीमित आवश्यकताओं को सीमित साधनों से सन्तुष्ट करने के लिये चयन प्रक्रिया से घिरा अशान्त मानव आज मानसिक शान्ति प्राप्त करने के लिये कहीं पर्वत की कन्दराओं की ओर जा रहा हैं, तो कहीं जल समाधि लिये खड़ा है। कोई संसार से विरक्त होकर मानसिक शान्ति प्राप्त करने का असफल प्रयास कर रहा है, तो कोई अपने परिग्रह को बढ़ाने में जुटा हुआ है। परन्तु मानसिक शान्ति उस परम वीर चक्र की तरह मानव से दूर भाग रही है, जो मरणोपरान्त प्राप्त होता है। यदि हम अपने जीवन में निम्नलिखित बातों को अपनायें तो संभवतया हम शान्ति का अनुभव कर सकेंगे।

(1) **अपनी आवश्यकताओं को सीमित करो :** जीवन में अशान्ति का सर्वप्रथम कारण आवश्यकताओं का निरन्तर वर्धन है। इन्हीं आवश्यकतओं की पूर्ति हेतु मानव न्यायोचित मार्ग को छोड़कर जीवन में कुटिलता और कठोरता को अपनाता है। जिससे उसका जीवन अशान्त हो जाता है। आवश्यकताओं का संकुचन निश्चय ही हमारे जीवन में सरलता और सरसता लायेगा।

(2) **कम खाओ और गम खाओ :** कम खाना शरीर को आरोग्यवर्द्धता प्रदान करता है तथा गम खाना वैमनस्य, ईर्ष्या, कलह जैसी बुराइयों से हमें दूर रखता है। यदि हमारा शरीर स्वस्थ है और राग द्वेष रूपी शत्रु पर हमने विजय प्राप्त कर ली है, तो जीवन अशान्त होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

(3) **स्वावलम्बी बनो : 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं'** एक अकाट्य सत्य है। यदि जीवन में उन्नति और शान्ति चाहते हो तो परावलम्बन छोड़कर आत्मनिर्भरता और स्वावलम्बन को अपनाओ। संभव है प्रारम्भ में कुछ कठिनाइयाँ आयें, परन्तु कठिनाइयों की काली रात निश्चित रूप से एक सुखद प्रभात लेकर आयेगी।

(4) **वाणी पर नियंत्रण रखो :** सन्त कबीर ने ठीक ही कहा है। कि

'ऐसी वाणि बोलिये, मन का आपा खोय'
औरों को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय।

मधुर वचन शत्रु को भी मित्र बना सकते हैं और कटु वचन स्वयं ही किसी शत्रु से कम नहीं। ऐसा सत्य भी बोलना, जो सुनने वाले को अप्रिय हो, त्याज्य है।

(5) **आत्माभिमुखी बनो :** प्रायः हम अपनी बुराइयों को छिपा लेते हैं और दूसरों की बुराइयों को बढ़ा चढ़ा कर व्यक्त करते हैं। परन्तु यदि हम अपने हृदय का अवलोकन करें तो पायेंगे कि हमारा अपना जीवन उनसे कहीं अधिक दूषित है संत कबीर के शब्दों में –

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो घट देखा आपना, तो मोसूं बुरा न कोय।

(6) **अपेक्षित व्यवहार करो :** हम चाहते हैं कि संसार के सभी प्राणी हमारा सम्मान करें। परन्तु यह सम्मान उसी समय प्राप्त हो सकता है जब हम दूसरों का सम्मान करेंगे। संक्षिप्त रूप में कहा जा सकता है कि हम दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करें, जैसा कि हम उनसे अपने लिये अपेक्षा करते हैं।

(7) **जीवन में एकरूपता लाओ :** जब तक मन, वचन और व्यवहार में एकरूपता नहीं आयेगी, हमारा जीवन अशान्त रहेगा। जीवन में जिस मार्ग पर चलने का निश्चय किया है, अपने मन, वचन और काया से उसका अनुसरण करो। यदि जीवन से झूठ, छल, फरेब एवं दम्भ को निकाल दिया तो जीवन शान्त और सरस बन जायेगा।

(8) **अपने से छोटों की ओर देखो :** संसार में एक से बढ़कर एक पुण्यवान और समृद्ध व्यक्ति हैं लेकिन यदि उनकी ओर देखकर ईर्ष्या करते रहे तो आसमान का थूका अपने ही मुँह पर आकर गिरता है। अपने से कम सम्पन्न व्यक्तियों की तरफ देखो, एक अपूर्व शान्ति मिलेगी।

(9) **प्रशंसा और निन्दा को समान समझो :** सत्कार्य करते समय लौकिक मानवों से सम्मान की अपेक्षा न करो। साथ ही साथ यदि कुछ व्यक्ति आपकी आलोचना कर रहें हैं तो उनसे भयभीत होकर सत्कार्य को अधूरा न छोड़ दो यदि देखना है तो केवल यह देखो कि जो भी कार्य आप कर रहे हैं, तथा आपकी आत्मा उस कार्य में आपका सहयोग कर रही है। विरोधों और अवरोधों के आने पर उग्रता धारण न करो, अपितु सहनशील बनो। जीवन कुन्दन बन जायेगा।

(10) **सप्त कुव्यसनों का त्याग करो :** शिकार खेलना, जुआ खेलना, चोरी करना, माँस भक्षण, मदिरापान, परस्त्रीगमन और वेश्या गमन – ये साातों कुव्यसन जीवन को नारकीय बना देते हैं। इनका सेवन करने वाला मानव इस जीवन में अशान्त और निन्दनीय जीवन व्यतीत करता है। मरणोपरान्त भी वह अवश्य ही अधम गति में जायेगा और अनन्त अनन्त युगों तक जीवन मरण की यातनाएँ सहन करता रहेगा। अतः जीवन को शान्त और सरल बनाने के लिये इन कुव्यसनों का त्याग करो।

(11) **यथा शक्ति दान दो :** अपनी नेक कमाई का कोई भी एक निश्चित अंश दान में देते रहो। जैन मत के अनुसार अभय दान सर्वोपरि दान माना गया है। परन्तु आहार दान और औषधि दान की महिमा भी कम नहीं है। भागमल जी महाराज धर्मार्थ औषधालय शास्त्री पार्क दिल्ली- 53 आप ही के सहयोग से इस क्षेत्र की निर्धन जनता की सेवा कर रहा है। आशा है कि आप पीड़ित मानवों के स्वास्थ्य लाभ के लिये और अधिक सहयोग देंगे।

सेवा और कर्त्तव्य

– प्रमोद चन्द जैन, शास्त्री पार्क

आज के आधुनिक युग में मानव ही मानव को भूल गया है। कारण ! मानव का साथ जीवन की प्रत्येक मंजिल एवं प्रत्येक मोड़ पर, कम्प्यूटर और आधुनिक युग ने ले लिया है। अतः आज के प्रगतिशील युग में हम गतिशील विनाश भी देखते हैं। गत कुछ वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि शायद ही पृथ्वी पर कोई ऐसा शुभ दिन बीता हो जिस दिन कोई बड़े स्तर पर विनाश सुनने, देखने या पढ़ने में न आया हो। साहित्यकारों का कहना है कि जब मानवी कृतकृत्याएँ अपनी सीमा लाँघ जाती हैं तब प्राकृतिक नियम संहारलीला प्रारम्भ करते हैं। मानव द्वारा आविष्कृत यंत्रों से ही मानव जाति का विनाश होता प्रतीत होता है।

ऐसे युग में मदर टेरेसा जैसे फरिश्ते की याद आती है जिसके हृदय में कल्पना की सीमा से भी अधिक करुणा व दया भरी हुई है। मदर टेरेसा के कार्यकलापों से संसार का शायद ही कोई अभागा व्यक्ति अपरिचित हो।

यहाँ मुझे बाल्यकाल में सुनी एक मार्मिक कहानी याद आती है जो इस प्रकार है। एक गाँव में एक दिन एक डाक्टर साहब के पास एक निर्धन व्यक्ति अपनी जर्जर काया लेकर हाँफता हुआ आता है और अपने पुत्र की बीमार अवस्था का बयान करते हुए प्रार्थना करता है कि यदि वह डॉक्टर साहब उसका परीक्षण कर, दवा दे दें तो उसकी जान बच सकती है। डाक्टर साहब को उस निर्धन की अवस्था पर कोई दया न आई और क्लब चले गए। फलस्वरूप उसके पुत्र की जीवनलीला समाप्त हो गई। कुछ समय पश्चात डाक्टर साहब के इकलोते पुत्र को सर्प ने डस लिया। आस-पास सर्प के काटे का इलाज करने वाला कोई न था। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, त्यों-त्यों शरीर में विष फैलता गया और जीवन दीप बुझने की संभावना प्रतिक्षण बढ़ती गई। उसी निर्धन व्यक्ति को जब यह पता लगा तो वह अपनी जर्जर काया को कई कोस घसीटता हुआ डाक्टर साहब के बंगले पर पहुँचा और उनके पुत्र की निर्जीव काया में प्राण फूँक कर वापस लौट गया। वह न तो धन का तथा न ही ख्याति का भूखा था। उसे अपने पुत्र के मृत होने पर दुःख का आभास था।

इस कहानी को यहाँ लिखने का आशय केवल यह प्रदर्शित करना है कि मानव जाति के कल्याण के लिए जहाँ नये आविष्कारों और पढ़ाइयों की आवश्यकता है, वहाँ उससे भी ज्यादा निःस्वार्थ सेवाभावना का होना अनिवार्य है। निःस्वार्थ सेवा भावना के वशीभूत इंसान अंसभव कार्य को भी संभव कर डालता है।

उपरोक्त कथा की गहरी छाप लेखक पर पड़ी। बाल्यावस्था से युवावस्था में आने के पश्चात जीवन यापन में लगे रहे। लगभग एक दशक पूर्व उपप्रवर्तक परम सेवाभावी श्री प्रेम सुख जी म० ने हमारा मार्ग दर्शन किया और हर बात असम्भव होते हुए भी एक औषधालय की रूपरेखा को कार्यान्वित रूप देने में सीमित साधनों से कुछ लोग जुट गए।

भारत वर्ष की राजधानी दिल्ली में यमुना नदी के किनारे वसा हुआ शास्त्री पार्क और उसके आसपास की बस्तियाँ। सरकार की ओर से यमुनापार एक उपेक्षित क्षेत्र है और उस पर ये बस्तियाँ जिनमें अधिकांश निर्धन व्यक्ति ही रहते हैं। यमुनापार के इस क्षेत्र में विशेषकर रोगियों को नीम हकीमों के इलाज पर ही निर्भर रहना पड़ता था। ऐसे समय में उपप्रवर्तक श्री प्रेम सुख जी म० के मार्ग दर्शन एवं प्रेरणा से वहुत ही लघु रूप में एक औषधालय की स्थापना की गयी। जो कि आज एक विशाल रूप में अपने ही विशाल भवन में निर्धन एवं कमजोर वर्ग की सेवा में कार्यरत है।

इस हस्पताल में विविध सेवाएँ उपलब्ध कराई जा चुकी हैं। जैसे कि कुशल चिकित्सकों द्वारा इलाज, कुशल और विदेशों में ख्याति प्राप्त नेत्र चिकित्सक द्वारा नेत्र रोगों का निदान, परीक्षण विभाग (लैबोरेट्री), एक्स-रे आदि। यह ही नहीं अपितु हस्पताल ने अपने सार्थक पंखों को फैलाकर कठिन समय में मानव जाति की सेवा करने का सफल प्रयत्न किया। गत वर्ष यमुनापार की बस्तियों में जब हैजे का प्रकोप फैला और सरकारी संयंत्र प्रत्येक व्यक्ति तक न पहुँच पाए तब हस्पताल ने संक्रामक रोग से बचने के हजारों की संख्या में इंजेक्शन रात-दिन लगाए।

जैन मुनि 1008 स्व. श्री भागमल जी महाराज धर्मार्थ औषधालय आज जिस स्थिति में पहुँचा है उस स्थिति में लाने के लिए प्रत्येक प्राणी ने जो भी उससे बन सका, सहायता की है। सहायता का रूप औषधि दान, द्रव्य दान, हस्पताल सामग्री, उपकरण दान आदि है।

इस हस्पताल के निर्माणाधीन प्रथम तथा द्वितीय तल में प्रसूति सेवाएँ तथा अन्य कई विशेषज्ञों की सेवाएँ उपलब्ध कराने के एकाकी लक्ष्य को दिलों में धारकर समिति युद्ध स्तर पर कार्यरत है। हस्पताल की प्रबन्धक समिति और उसके कार्यकर्ता लक्ष्य की प्राप्ति का आधार दृढ़ विचार और जनमत का सहयोग (वह किसी भी रूप में हो सकता है) ही है। इरादे हमारे सहयोग आपका। इन्हीं कल्पनाओं में लीन है यह लेखक और भविष्य में आपके सहयोग के परिणामों को सर्वसाधारण तक पहुँचाने का वायदा करते हुए, मैं इस लेख को यहीं पूर्ण करता हूँ।

हमारी वर्तमान आवश्यकताएँ

(1) हस्पताल भवन के निर्माणाधीन प्रथमतल एवं द्वितीयतल को पूरा करना

(2) दंत चिकित्सा के लिए आधुनिक उपकरणों से युक्त कक्ष की व्यवस्था करना

(3) खून एवं मल मूत्र परीक्षा विभाग (लैबोरेट्री) के लिये आधुनिक उपकरणों की व्यवस्था करना

(4) रोगी वाहन (Ambulance) की व्यवस्था

(5) रोगियों के प्रयोग के लिये वाटर-कूलर का प्रबन्ध

हमारी भविष्य की योजनाएँ

(1) पूर्ण सुविधायुक्त मैटरनिटी वार्ड की स्थापना जिसमें आपरेशन की भी व्यवस्था हो

(2) ई.सी.जी. उपकरण की व्यवस्था

(3) रंगीन एक्स-रे एवं कैट-स्कैन की व्यवस्था

(4) आई.सी.सी.यू. (ICCU) कक्ष की स्थापना

अपने संरक्षकों/दानी महानुभावों से उपरोक्त कार्यों के लिये आर्थिक सहायता एवं सुझाव देने का अनुरोध है।

भवदीय

जैन मुनि 1008 स्व. श्री भागमल जी महाराज

धमार्थ औषधालय समिति (पंजीकृत)

卐 श्री महावीराय नमः 卐

With best compliments from :

Wholesale Distributors :

RAYMOND'S
Suitings

GRAVIERA
Suitings

B. S. Textile Corporation

488, Katra Neel, Chandni Chowk

DELHI - 110006

Phone : 2510939

With best compliments from :

श्री महावीराय नमः

Phones : Off. : [illegible]
[illegible]
Res. : [illegible]

Chatter Sain Jain & Co.

Dealers in :

STEEL SHEETS & ALL KINDS OF SHEET CUTTING

Z-219, Loha Mandi, Naraina,

NEW DELHI-110028

With Best Compliments from :

श्री महावीराय नमः

2248391
Phones : Res. 2242434
2246870
2246690

Shalu Hosiery (Regd.)

Manufacturers and Suppliers of :

BAWA SUITS, NOORIE & SHIRTS

Shop : **741/A, Janta Gali Indra Mkt.,**

Gandhi Nagar, Delhi-31

...ों की सेवा के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए ।

शुभ कामनाओं सहित :

महावीर प्रशाद एण्ड संस

कपड़े के व्यापारी

दूसरी मंजिल, श्याम बाजार, कटरा शहनशाही,

चाँदनी चौक, दिल्ली-११०००६

फोन : २६४७७५

Sister Concern :

M/s Uggar Sain Sushil Kumar, Bombay

M/s Chhaju Ram Mitter Sain Jain, Bombay

M/s Ashok Brothers, Delhi

प्रमत्त को सब ओर भय रहता है। अप्रमत्त को किसी ओर भी भय नहीं है।

With best compliments from :

PADAM KUMAR JAIN

PANNA LAL JAIN & SONS

Dealers in :

ALL KINDS OF DUPLEX BOARD & GREY BOARD

Associate Concern :

SANMATI PAPERS

235, KUCHA MIR ASHIK, CHAWRI BAZAR,

DELHI-110006

Phone : **Off. : 266753**
Resi. : 2209307

With best compliments from :

SWASTIC SALES CORPORATION

WHOLESALE PAPER & BOARD MERCHANTS

DISTRIBUTORS :

STAR PAPER MILLS LTD.

PAPER & PULP CONVERSIONS LTD.

PAPER & PULP CONVERSIONS LTD.
(EUROKOTE DIVISION)

THE CENTRAL PULP MILLS LTD.

1014, CHAWRI BAZAR

DELHI-110006

PHONES :

OFF. : [illegible] RES. : 2911110, 2911409, 2915777, 2915767

With best compliments from :

JAMBOO TRADERS

Paper & Board Merchants

4036, (Haryana Building) Chawri Bazar, Delhi-110006

Phones Off. : 2918959, 2915385   Res. : 637619
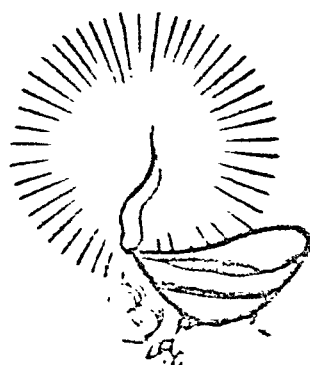
JAMBU-DEEP (Regd.) : All kinds of Office Files, Record, Flat, Index, Box & Clip File

PARVEEN (Regd.) : Exercise Books, Practical Copy, Register, Botany File

SHEELA (Regd.) : All kinds of High-Class Account Books

With best compliments from :

Sh. Salek Chand Jain

MAGNUM PAPERS (P) LTD.

18/31, SITE NO. 4, SAHIBABAD (U.P.)

Manufacturing of :

White, Yellow, Duplex Board, Colored Cover Paper & Pulp Board, Grey Board and Kraft Paper

Contact :

DELHI PAPER CO.

685, Chitla Gate, Chawri Bazar, Delhi-110006

Phones : Off. : 264503-261179 Res. 279038-265375 Mill 86-8248, 86-9267

दुःख से सदा सजग रहने वाला साधक ही उससे छुटकारा पा सकता है।

With best compliments from :

Phone : 2512548
Resi. : 7121226

SURESH TEXTILES

1365, Katra Lehswan, Chandni Chowk,

DELHI-110006

Wholesale Dealers in :

Dress Material, Suiting & Shirting

D. C. Silk Mills Pvt. Ltd. Bombay

Cekowa-SAFARI

Sonu Synthetics Ltd. Bombay

With best compliments from :

A Great Designer of Hosiery

Manufacturers of : ALL KINDS OF BABA SUITS & T-SHIRTS

Welcome your Visit :

Office : IX/1993, Gali No. 4, Kailash Nagar, Delhi-110031

Factroy : IX/2796, Gali No. 6, Kailash Nagar, Delhi-110031

V. K. JAIN

उपदेशक सत्य को कभी छिपाए नहीं, और न ही उसे तोड़-मरोड़ कर उपस्थित करे।

With best complimentnts from :

Tele. : 2525129

MURARI SILK MILLS

MURARI FABRICS

SUITING & SHIRTING

1040/1st Floor, Kucha Natwa

Chandni Chowk, Delhi.

AND

Phone : 2529932

Murari Lal Mithan Lal Jain

Katra Satya Narain, Chandni Chowk
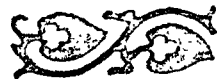
DELHI-6

Sister Concern :

M. L. JAIN & SONS

With best compliments from :

For Super Results and Performance

Always Use :

WELL-AND-LONG-TRIED PAPERS AND BOARDS OF

ROHIT PULP AND PAPER MILLS LTD. BOMBAY

PRINTCOTE CHROMO PAPER ☆ DUPLEX BOARD ★ BANKERS LEDGER, WHITE MAPLITHO ☆ COLOURED PRINTING PAPER AND WHITE CREAMWOVE ETC.

At your service also :

VERDHMAN PAPER MART

2355, Dharampura, Delhi-110006

Phones : Off. 269461 269462 Resi. 2201157

Authorised Dealers for :

M/s. ROHIT PULP & PAPER MILLS LTD. BOMBAY

M/s. GUJRAT PROPACK LIMITED, BARODA

जो अपने पर अनुशासन नहीं रख सकता, वह दूसरों पर अनुशासन कैसे कर सकता है ।

With best compliments from :

Mangal Sain Tirlok Chand Jain

Office : 114, Dariba Kalan, Delhi-110006
Sales Office : 2691, Roshanpura, Nai Sarak, Delhi-110006

Phones :

Dariba Office : 263226 Roshanpura : 265493 Residence : 6461403, 6464089

Specialised Manufacturers of :

SARASWATI BRAND

All Kinds of High Class ACCOUNT Books
All Kinds of Loose Leaf Binders Sheets & Index Sets
Duplicate and Triplicate Books
Shorthand Note Books
Peon Books Rent & Other Receipt Books
All kinds of Office Files
All kinds of Education and Ration Depot Register
All Size of Slip Pads & Note Sheets Pads
Shops & Factory Establishment Registers Etc.

A HOUSE OF QUALITY
SARASWATI BRAND PAPER PRODUCTS

Sister Concern :

SURESH CHAND ARUN KUMAR JAIN

2209, CHATTA SHAHJI, CHAWRI BAZAR, DELHI-110006

Phone : 264971

J. C. TRADING CO.

WHOLESALE PAPER AND BOARD MERCHANTS

3980, PRAKASH MARKET, CHAWRI BAZAR,

D E L H I - 110006

Phones : Ofl. 2912923, 2914764, 2916210 Resi. : 266695

Stockists : **ALL VARIETIES OF DUPLEX BOARD,**

GREY BOARD AND IMPORTED PAPERS

Associates :

D. K. PAPERS, 4036, Chawri Bazar, Delhi-110006

J. C. SALES PVT. LTD., 4036, Chawri Bazar, Delhi-110006
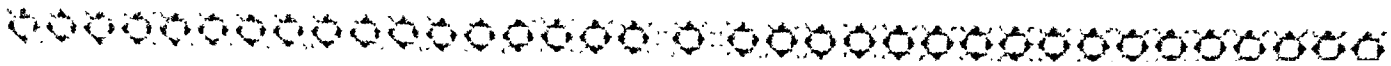
With best compliments from :

Telephone No. Shop : 275966
Resi. : 262103

M. K. TEXTILES

1949, Katra Shahan Shahi, Chandni Chowk

DELHI-110006
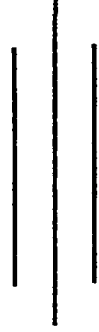
A House of Exclusive Suitings & Shirtings

Stockists : **Raymond's, Dinesh, Digjam, O. C. M. Graviera, Gwalior, Jiyaji & Vimal Mills**

With best compliments from :

BINDRA TEXTILES

WHOLESALE & RETAIL CLOTH MERCHANTS OF

DIGJAM AND GWALIOR SUITING

296, OUT SIDE KATRA PIAREY LAL

CHANDNI CHOWK, DELHI-110 006

TEL. : DEPOT 265677 RES. : 591840

अज्ञानी आत्मा पाप करके भी उस पर अहंकार करता है ।
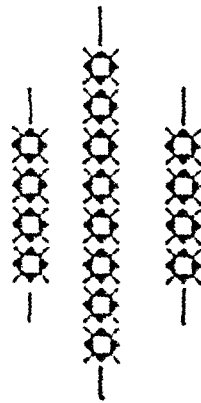
नरेन्द्र कुमार जैन ने अपनी धर्मपत्नी राज रानी की पुन्य स्मृती में योग दान किया ।

दूरभाष : **264570**

जगदीश प्रसाद नरेन्द्र कुमार जैन

हर प्रकार के लिफाफे, फाइल व कार्ड के विक्रेता

197, गली बताशान, चावड़ी बाजार,

दिल्ली-110006

दूरभाष : **264570** P. P.

धनेन्द्र कुमार जैन एण्ड ब्रादर्स

हमारे यहां शादी कार्ड, निमन्त्रण कार्ड तथा

हर तरह के कार्ड किफायत से मिलते हैं :

222/11, अग्रवाल मार्किट, चावड़ी बाजार,

दिल्ली-110006

जैसे बीती हुई रातें फिर लौटकर नहीं आतीं, उसी प्रकार मनुष्य का गुजरा हुआ जीवन फिर हाथ में नहीं आता ।

With best compliments from :

India File Manufacturers

Manufacturers of :

All kinds of Files, Envelopes & Registers

GOVERNMENT CONTRACTORS

Factory :
24-C, Shastri Park,
G.T. Road, Shahdara,
Delhi-110053

Office :
1280-18, Vakilpura,
(back Chipiwara Kalan),
Delhi-110006

Phones : Off. :265281, 266907, Factory : 2285383, Resi. : 2281487

Gram : INDIA FILE

Sister concern :

NAVIN PRINTERS

High Class Printers and
Government Suppliers

2422, Chipiwara Kalan, DELHI-110006,
Ph. : 266907

Associate Concern :

GOYAL ENGINEERING COMPANY

1210, Vakilpura, Delhi - 110006

Phones : 265281, 266907, 27735[illegible]

Gram : Marble BOARD

卐 Om Namah 卐

Hallow : Off. 261158
& 262013
Resi. 263303

With best compliments from :

VEER & CO.

Wholesale Paper & Board Merchants

Distributors :

- Gangadhara Paper & Board Mills (P) Ltd.
- Bhagwati Paper & Board Mills.
- Jain Hans Paper & Mill Board Industries.
- Shankar Board Mills.
- Shri Bhawani Paper Mills Limited.

Sister Concern :

MITTHAN LAL SUKHDARSHAN LAL JAIN

Stockists : SANT RAM PAPER MILLS
TRILOK PAPERS (P) LTD.

TRISHALA PAPERS

Commission Agents : TRILOK PAPERS (P) LTD.
GUJARAT PAPER MILLS LIMITED.

303 - 306, Kucha Mir Ashiq, Chawri Bazar,
Delhi - 110 006

PHONES : Office & Resi. : 261158, 262013, 263303

SUKH SHANTI & CO.

Commission Agents : TRILOK PAPERS (P) LTD.
GUJARAT PAPER MILLS LIMITED

3793, Nai Basti, Pahari Dheeraj,
Delhi - 110 006

We are specialise in :—

Mill Board, White Duplex Board, Grey Board, Kraft Paper Board, Hard Board Book Binding Cloth, Ploycoated Paper, File Board, Kraft Paper, Media Paper, White Printing Paper and Coloured Card Sheet etc.

[illegible] हेतु मिलती है।

With best compliments from :

P. K. JAIN & SONS

WHOLESALE BOARD MERCHANTS

Stockist : **R. T. Duplex Board**

235, KUCHA MIR ASHIQ,
CHAWRI BAZAR, DELHI-6

Phones : Off. & Resi.
261966

धर्म गांव में भी हो सकता है और जंगल में भी। क्योंकि वस्तुतः धर्म न गांव में कहीं होता है और न जंगल में वह तो अन्तरात्मा में होता है।

MITTHAN LAL JAIN & SONS

234, CHAWRI BAZAR, DELHI-110006

Authorised Distributors :

- Central Orissa Straw Board Pvt. Ltd.
- Sree Raja Rajeswari Paper Mills Ltd.
- National Packing Industries.
- Paramount Paper Mills.
- Swastik Paper & Board Mills
- Harjayant Paper & Board Mills Co.
- Kharati Lal Dua & Sons [P] Ltd.
- Sanjay Board & Paper Mills.
- Standard Paper Board Industries.
- Maha Luxmi Paper & General Industries.

SISTER CONCERN :-

VINAY JAIN & CO.

2964, KUCHA MAI DASS, BAZAR SITA RAM, DELHI-110006.

TEL. : 264753 □ 273113 □ 269544 □ 273129 □ 2242400

शुभ कामनाओं सहित :

अ ल का हो ज री

पदम सैन संजीव कुमार जैन

मकान नं० 6215, जैन मन्दिर गली,

गान्धी नगर, दिल्ली-110031

With best compliments from :

TARA PAPERS

Office : 232, KUCHA MIR ASHIQ, CHAWRI BAZAR,

DELHI-110006 (INDIA)

Phones : Off. 262503, Res. 741100 Grams : TARASONS

शुभ कामनाओं सहित :

दूरभाष कार्यालय : 771254
775525
निवास : 504143
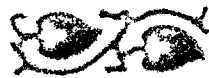
जोती प्रशाद महावीर प्रशाद जैन

पेपर एण्ड बोर्ड मर्चेन्ट्स

४८५८, चौक बारा टूटी, सदर बाजार, दिल्ली-११०००६

Phones : Shop 772377- 772477
Resi. 7119030-7119111

RAM PERSHAD JAIN & SONS

Manufacturers, Supplier & Stockists of :

TAILORING MATERIALS

426, Katra Nabi Bux,
Sadar Bazar,
DELHI-110006

SINGHAL STEEL TRADERS

Dealing in :

Silicon Steel Sheets and All Type of Sheet Cutting

Z-201, LOHA MANDI, NARAINA, NEW DELHI-110028

साधक कभी भी यश, प्रशंसा और दैहिक सुखों के पीछे पागल न बने ।

With best compliments from :

Off. 276194, 266532
Phones : 274253, 266548
Resi. 674888, 679048

S. D. CORPORATION

PAPER, BOARD & GENERAL MERCHANTS

Distributors :

Sree Rayalaseema Paper Mills Ltd.

Vinod Paper Mills Limited.

Aggarwal Pulp & Paper Mills Ltd.

***

Office :

2485, CHATTA SHAHJI,

CHAWRI BAZAR,

DELHI-110006

शुभ कामनाओं सहित :

दूरभाष : दुकान : 2922531
घर : 2244098

रमेश चन्द संजीव कुमार जैन

थोक वस्त्र व्यवसायी

कटरा सत्यनारायण, चाँदनी चौक, दिल्ली-११०००६

शुभ कामनाओं सहित :

Phones : Office 771475, 774720
Resi. 775453, 773153

SHANTI SALES CORPORATION

PAPER & BOARD MERCHANTS

3629, Main Bazar, Bara Hindu Rao, DELHI-110006

शान्ति सेल्स कारपोरेशन

[illegible]

With best compliments from :

KRISHNA SALES CORPORATION

GOPAL SALES CORPORATION

4753-A, Ahata Kidara, Bara Hindu Rao, DELHI-110006

Dealers in :

All Types of Duplex & Grey Board, Rohit J.K.R.T.

Sirpur, Papco, Balakrishna Magan etc.

Telex : 031-61790 Phones Office : 777993, 522351, 776989

Resi. : 7119929

Associates :

Aar Gee Board Mills Pvt. Ltd.

With best compliments from :

KAGAZ VANIJYA

Paper Marketing Organisation

454-55/11, *Mela Ram Chember, Chittla Gate,*

Chawri Bazar, Delhi-110006

Phone : 261174, Resi. : 2244957

अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा परम दान है तथा अहिंसा परम तप है। अहिंसा परम दम है, अहिंसा परम फल है, अहिंसा परम मित्र है तथा अहिंसा परम सुख है। —वेद व्यास।

शुभ कामनाओं सहित :

जय आत्म 卐 श्री महावीराय नमः 卐 जय आनन्द

जैन कालोनी, रानी खेड़ा, कराला रोड़,

दिल्ली-८१
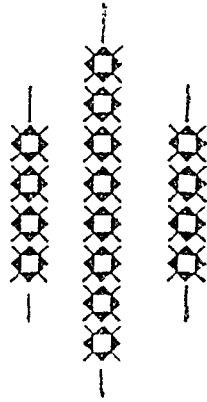
सम्पर्क—सुखवीर चन्द जैन (त्रिनगर)

आनन्द जैन (त्रिनगर)

जैसे वृक्ष के फल क्षीण हो जाने पर पक्षी उसे छोड़कर चले जाते हैं, वैसे ही पुरुष का पुण्य क्षीण होने पर भोग साधन उसे छोड़ देते हैं उसके हाथ से निकल जाते हैं।

With best compliments from :

L.S.T. No.
C.S.T. No. L/C/34/048432 dt. 27-5-85

Phone : Offi. 2521746
Resi. 20 46 64

VARDHMAN ELECTRICALS

GOVT. CONTRACTORS AND GENERAL ORDER SUPPLIERS

DEALERS IN :

ALL KINDS OF ELECTRICAL GOODS

Stockists & Wholesale Dealers in :

SIEMENS, LT/LK, MEI, STRIPLEX, HAVELL'S ENGLISH ELECTRIC,
BENTEX STARTER, SWITCH GEARS, BAKELITE & PORCLINE
ACCESSORIES, UNDER GROUND GRANDLY CABLES &
ALL TYPES OF PANNEL ACCESSORIES & WIRES ETC.

Shop No. 1853, Surya Bazar, Bhagirath Palace, Electrical Market,
Chandni Chowk, Delhi-110006

ास्त्रों का बहुत सा अध्ययन भी चरित्र हीन के लिए किस काम का ? क्या करोड़ों दीपक जला देने पर भी अंधे
ो प्रकाश मिल सकता है ।

With best compliments from :

Phone : Bombay Shop 317980, 317771
Resi. 365376, 388306

Phone : Delhi Shop 276626
Resi. 264016, 279533

JAIN SILK INDUSTRIES

Head Office :

29, Shammi Gally, Swadeshi Market,
Kalba Devi Road, Bombay-400002

★★★★
★★

Branch :

1929, Katra Shahanshai, Chandni Chowk,
Delhi-110006

Manufacturers :

SUTING SHIRTING & DRESS MATERIAL

फैशन की दुनिया में एक जाना पहचाना नाम

श्री सुखमाल चन्द जैन

इस पुनीत अवसर पर औषधालय की प्रगतिविधी पर परम हर्ष व
सब कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हैं।

With best compliments from :

JAIN ENTERPRISES

A-18, Jhilmil Industrial Area
Shahdara, Delhi-32

Tele : Office
2281891
2281357

Resi.
2205748
2215838

Manufacturers of :
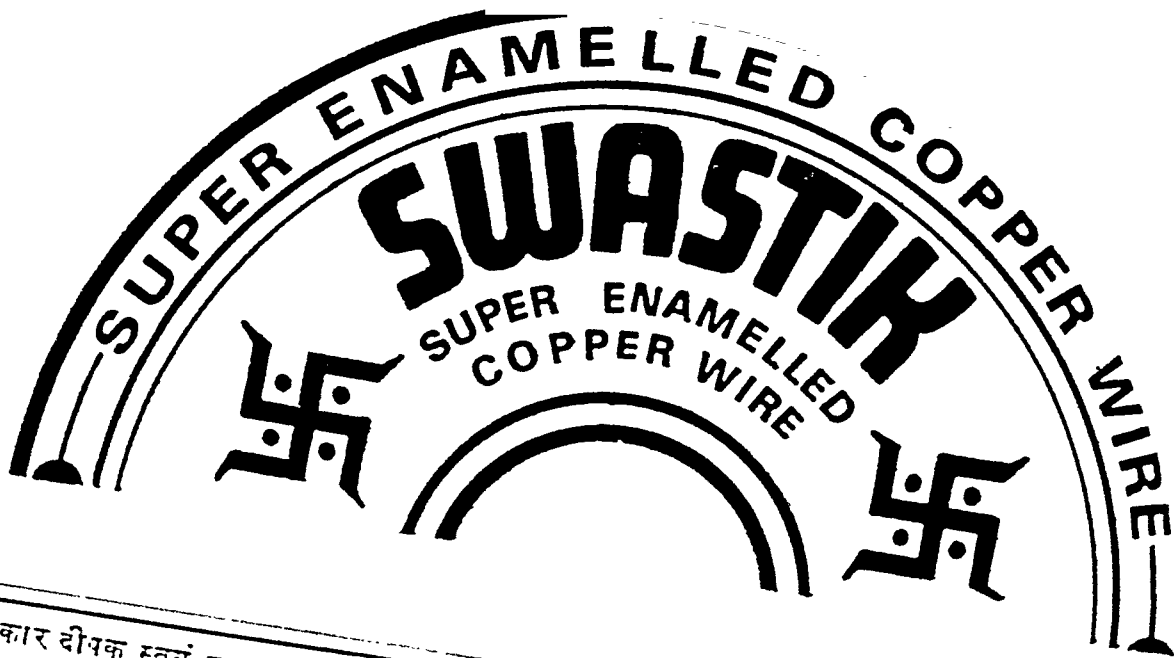
जिस प्रकार दीपक स्वयं प्रकाशमान होता हुआ अपने स्पर्श से अन्य सैकड़ों दीपक जला देता है, उसी प्रकार सद्‌गुरु स्वयं ज्ञान ज्योति से प्रकाशित होते हैं एवं दूसरों को प्रकाशमान करते हैं। —आ० भद्रबाहु।

With best compliments from :
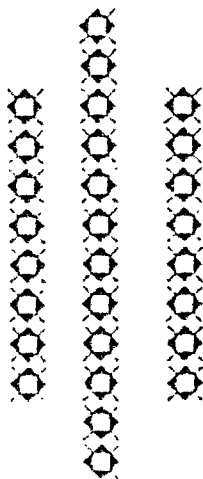
BHUSHAN PAPER MART

83. CHAWRI BAZAR,

DELHI-110006

PHONES : Offi. 27 88 44, 278855, 5716177
Res. 2242000, 266660, 2241900

With best compliments from :

Phones : Off. : 264122, 264512
Res. : 7125256

Durga Paper Board Company

All Kinds of Paper Board & Waste Paper Merchants

STOCKISTS OF :

NABHA PAPER MILLS (P STD., MALERKOTLA
GULAB PAPER BOARD MILLS, KARNAL
EMGEE PAPER & BOARD MILLS
FLORA PAPER & BOARD MILLS

Distributors of : **DUPLEX BOARD**

NABHA PAPER MILLS (P) LTD.
VISHAL PAPER MILLS (P) LTD.
BHOPAL PAPER BOARD LTD.
SHIVANI PAPER BOARD MILLS

980/81, Chhota Chhipiwara, 3/2, Makki Paper Market, Chawri Bazar, DELHI-110006

ज्ञानी के लिए क्या दुःख, क्या सुख ? कुछ भी नहीं ।

With best compliments from :

Phone : 2513893
2520835

ARVIND TEXTILES

Manufacturers of :

SUITING & SHIRTINGS

FIRST FLOOR, KATRA LEHASWAN,
CHANDNI CHOWK,
DELHI-110006

With best compliments from :

Phones : Shop 2513473
Resi. 52 99 72

PREM CHAND & CO.

(Stockist DCM Group)

Katra Lehswan, Chandni Chowk,

DELHI-110006

Satish Kumar Sunil Kumar

Katra Lehswan, Chandni Chowk,

DELHI-110006

PARAS COTTON MILLS

Katra Satnarain, Chandni Chowk,

P. O. Box No. 1065

DELHI-110006

Spl. SANGITA & SARIKA BLOUSES

Phone : 2926721, 2526785

Prem Chand Ram Roop Jain

Katra Satnarain, Chandni Chowk,

DELHI-110006

ग्रध्ययन से ज्ञान पूर्ण मनुष्य का निर्माग होता है, सम्मेलन से दक्ष मनुष्य का निर्माण होता है ग्रौर लेखन मे सटीक मनुष्य का निर्माण होता है ।—वेकन

With best compliments from :

॥ श्री वीतरागाय नमः ।

Phone : Shop 2511275
Resi. 26 56 81

SATISH TEXTILES

Wholesale Cloth Merchants & Commission Agents

1st Floor, Katra Satnarain, Chandni Chowk,

DELHI-110006

सतीश टैक्सटाईल्स

कटरा सत्यनारायण, पहली मंजिल,

चांदनी चौक, दिल्ली-6
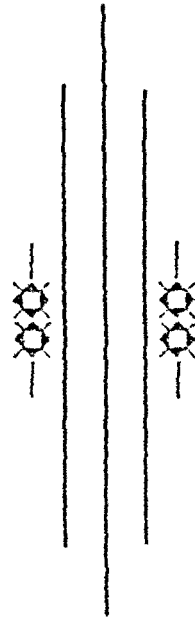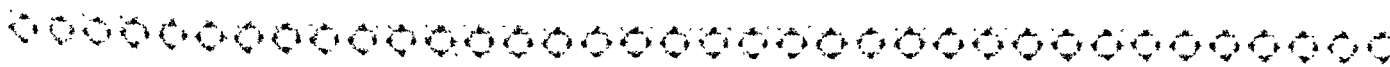
With best compliments from :

SABHERWAL MEDICAL STORE (REGD.)

1586, M. J. BUILDING, BHAGIRATH PALACE, DELHI-110006

Tele. : 235750, 238312 Res. : 394475, 536063

Distributor for :

BRITISH PHARMACEUTICAL LABORATORIES

B. P. L. PHARMACEUTICAL LABORATORIES

MONTARI LABORATORIES (P) LTD.

With best compliments from :

श्री महावीराय नमः

Phones : Office : 265569
Resi. : 263618
Fac. : 263618

PANKAJ STATIONERY PRODUCTS

Manufacturers & Suppliers of :

FILE, ENVELOPES, STATIONERY GOODS PAPER MERCHANTS
& GOVT. ORDER SUPPLIER

Factory : 2322, Gali Chhoti Pahar Wali, Chawri Bazar, Delhi-6

Office : 2360, Dharam Pura, Chawri Bazar, Delhi-6

अहिंसा श्रद्धा और अनुभव की वस्तु है, एक सीमा से आगे तर्क की चीज वह नहीं है।—महात्मा गांधी।

With best compliments from :

CONTROL CORROSION

WITH

ACROLITE POLYESTER RESINS

Manufacturers :

ACROPOLYMERS PVT. LTD.

KHANDSA ROAD, GURGAON-122 001

Phone : 20962 : 22069

BRANCH OFFICE :

1 14, Asaf Ali Road, New Delhi-110 002

PHONE : 731198 : 734032
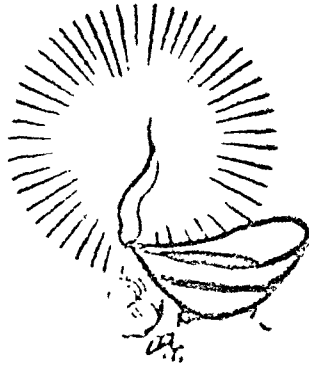
With best compliments from :

Phones : Off. : 516465, 528090
Res. : 2212221

DEEPAK SALES AGENCY

Dealers in :

ALL KINDS OF PAPER & BOARD

4214, Gali Nihal Singh, (Opp. Gali Lotan Jat)
Pahari Dhiraj, DELHI-110006

Phones : Office : 528090, 516465
Res. & Fac. : 212221

SUNIL PACKAGING INDUSTRIES

Mfg. of :

CORRUGATED SHEETS, ROLLS & BOXES

Dealers in :

ALL KINDS OF PAPER & BOARD

iX/3527, Gian Nagar, Gali No. 1, Mahabir Gali, Gandhi Nagar,
D E L H I - 1 1 0 0 3 1

With best compliments from :

M. K. JAIN

Phones : Off. : 260452
Res. : 238396

J. P. TRADING COMPANY

Wholesale Paper Merchants

222/8 Aggarwal Market, Opp. Dena Bank. Chawri Bazar,
D E L H I - 1 1 0 0 0 6

Associate Concern

Deeptee Paper Mart

1222/8, CHAWRI BAZAR, DELHI-110006

न्याय की अदालतों से भी एक बड़ी अदालत होती है। वह अदालत अंदर की आवाज की है और वह अन्य सब अदालतों से ऊपर की अदालत है।—महात्मा गांधी

शुभ कामनाओं सहित :

हम अपनी १९वीं वर्षगांठ पर अपने ग्राहकों का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। हमारे यहां हर किस्म का कागज, न्यूज प्रिंट, कार्ड बोर्ड, वैवाहिक एवं अन्य निमंत्रण पत्र, लिफाफे व विजिटिंग कार्ड हर समय मिलते हैं।

लकी पेपर मार्ट

५३३ नेताजी गली, गाँधी नगर, दिल्ली-३१

दूरभाष : 2212165

With best compliments from :

L. C. 40 101217/05/84
Dated 12-5-84

Phone : Shop 27 42 14
Resi. 2247148

ABHA PAPER CORPORATION

Whole Sale Paper & Paper Board Merchants
and Stationers

Specialist : **DUPLEX BOARD**

[illegible] 2nd Floor, Mela Ram Market, Chawri Bazar, Delhi-[illegible]

With best compliments from :

TRISHLA CHIT FUND (P) LTD.

(Approved by Govt. of India)

72-A, Vikas Marg, Laxmi Nagar,

DELHI-110092

SAVE THE BEST

Through

Our

Short
MID.
LOng TERM *Scheme*

K. C. JAIN
TRISHLA JAIN
USHA JAIN

जन्म और मरण के महाप्रवाह में डूबते प्राणियों के लिए धर्म ही द्वीप है, प्रतिष्ठा-आधार है, गति है, और उत्तम शरण है।

With best compliments from :

Gram : GOLDART

Phones : Shop 26 27 76, 27 62 75
Resi. 7112325, 7112579

POPULAR JEWELLERS

Manufacturers

37, Gali Paranthewali, Chandni Chowk,
DELHI - 6

With best compliments from :

Phone : 2921487
2521941

VEERA ENTERPRISES

Manufacturers & Stockists in : C. P. BRASS BATH ROOM FITTINGS, G. I., C. I., A. C., S. W., P. V. C. PIPES & FITTINGS & ALL KINDS OF SANITARY & HARDWARE GOODS

3523/26, Gali Hakim Baqa, Balaji Market, Hauz Qazi,
DELHI - 110006

With best compliments from :

Grams : AZURELAID 卐 Office : 2913316, 2916162
Resi. : 2518847

Swastic Trading Agency

WHOLESALE PAPER & BOARD MERCHANTS

Distributors :

THE BHADRACHALAM PAPER BOARDS LTD.

CENTURY PULP AND PAPER

INDIA PAPER PULP COMPANY LIMITED

3984, CHAWRI BAZAR, DELHI-110006

卐 श्री महावीराय नमः 卐

With best compliments from :

RAJDHANI PAPER DISTRIBUTORS

938, Ist Floor Chatta Shahji Chawri Bazar,
D E L H I - 110006

TEL. : 265845 RES. 271169 TLX. : 031-65846 PTEX-IN

Authorised Wholesale Dealer :

Bhadrachalam Paper Boards Limited

पर्वत की दरार के समान जीवन में कभी नहीं मिटने वाला उग्र क्रोध आत्मा को नरक की ओर ले जाता है।